بسم الله الرحمن الرحيم

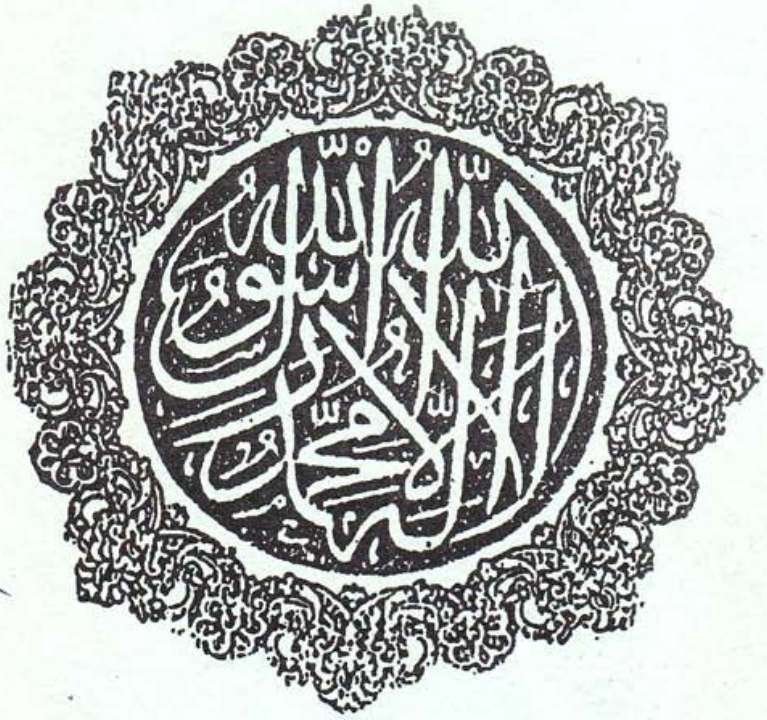

किताब

अल्लाह वालों का बचपन और बच्चों की तालीम व तरबियत

कातिब व मौल्लिफः

अल अलीमुल जईय्यद दरजा अव्वल एहमद अली राज

साबिक उस्तादे जामिया सैफिया, सूरत

नाशिर : तन्ज़ीमे इशाअत इस्लामी ताअलीम 1400

66, डॉ. ज़ाकिर हुसैन मार्ग, उदयपुर (राज.)

फोन : 0294–2411883 (नि.), 2527526 (दु.)

بسم الله الرحمن الرحيم

يحيى خذ الكتاب بقوة

अल्लाहो लाइलाहा इल्लाहो

वआतेनाहुल हुक्मा सबिय्या०

–सूरए मरियम

और हमने उनको (याहया अ.स. को) बचपन में ही हुक्म अता किया।

हदीसे नबवी:

"अकरिमू औलादकुम व हस्सिनू अखलाकहुम"

अपनी औलाद की इज़्ज़त करो और उनके अखलाक को बेहतर बनाओ।

किताब

अल्लाह वालों का बचपन और बच्चों की तालीम व तरबियत

कातिब व मौल्लिफ:

अल अलीमुल जईय्यद दरजा अव्वल एहमद अली राज

साबिक उस्तादे जामिया सैफिया, सूरत

नाशिर : तन्ज़ीमे इशाअत इस्लामी ताअलीम 1400

66, डॉ. ज़ाकिर हुसैन मार्ग, उदयपुर (राज.)

फोन : 0294–2411883 (नि.), 2527526 (दु.)

हिन्दी तर्जुमा:

सज्जाद हुसैन खाराघोड़ा वाला

फोन: 0294–2525216, 2454044

कम्पोज़िंग एण्ड एडिटिंग:

आरिफ अली कांकरोली

फोन : 98294 99824

786 / 92–110

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलहम्दो लिल्लाहि व सलामुनअला इबादिहिल लज़ीनस्तफा। अअल्लाहो खैरुल अम्मायुशरिकून।

अम्मा बअद।

1. अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने नहीं किसी चीज़ से रूहानी आलम को पैदा किया जिनको फरिश्ते कहते हैं। उसके बाद जिरमानी आलम को पैदा किया ये आलम है आसमान, सूरज, चांद, सितारे वगैरह। उसके बाद इस जिस्मानी आलम को पैदा किया जिसमें हम रहते हैं। आग, हवा, पानी और मिट्टी चार अनासिर। और मअदिन (खनिज), नबदि (वनस्पति), हैवान (जीव–जन्तु) तीन मवालीद और सबके बाद में इन्सान को पैदा किया जो तमाम मखलूकात में अपनी अक्ल की वजह से अशरफ और मुमताज़ है।

2. इन्सान अशरफुल मखलूकात होने के साथ वो जाहिल पैदा होता है। इसको किसी की तालीम व तरबियत और हिदायत की सख्त ज़रूरत है। इस ज़रूरत को पूरी करने के लिए अल्लाह सुब्हानहू तआला ने ऐसे इन्सान को पैदा किया कि वो अल्लाह से अल्लाह के कलाम (बातों) को सुनकर उस इलाही कलाम को तमाम इन्सानों तक पहुँचा दे। उनकी तालीम व हिदायत की ज़रूरत को पूरी कर दे। अगर ऐसा न हो तो इन्सान की अल्लाह पर हुज्जत (बहस) होगी कि तूने हमको जाहिल पैदा किया और हम में से किसी मौल्लिम (उस्ताद) व हादी (रहबर) को नहीं पैदा किया...

3. ऐसा मौल्लिम व हादी–ए–इन्सान कामिल आदम अलैहिस्सलाम है। आदम अलैहिस्सलाम को अल्लाह ने भीगी हुई मिट्टी से पैदा किया और उनके अन्दर अपनी रूह डाली। वो ज़िन्दा हुए और पैदा होते ही उस आलम–ए–जिस्मानी पर और खुद अपनी पैदाइश पर गौरो–फिक्र किया। बड़े तेज़ दिमाग के थे। तमाम अक्ल वाले इन्सानों के इन्सान थे। उन्होंने देखा, सोचा कि 'मैं हूँ' 'मैं नहीं था और हुआ' मैं खुद अपने आप को पैदा करने वाला नहीं हूँ और ये आलम तमाम भी खुद अपने–आप से पैदा नहीं हुआ। तो मेरा और इनका कोई पैदा करने वाला है और ज़रूर वो मुन्सिफ

आदिल है तो अद्ल का तकाज़ा ये है कि सबको एक जैसा पैदा करे मगर मैं हज़ारों इखतिलाफात देख रहा हूँ। ऊपर आसमान, सूरज, चाँद, रोशन सितारे वगैरह, इधर अन्धेरा चार अनासिर तीन मवालीद वगैरह बेशुमार मुखतलिफ चीज़े क्यूं है? लगता है कि इस आलम के पहले कोई ऐसा आलम ज़रूर है जिसमें अल्लाह के अद्ल के मुताबिक कोई इख्तिलाफ नहीं होगा। फिर ऐसे हालात हुए होंगे जिससे इख्तिलाफ का वजूद आया। साबित हुआ कि इस आलम के पहले और आलम है वो अव्वल है और ये आलम दूसरा है। और इन दोनों का कोई खालिक है। इस सनअत (कारीगरी) का कोई सानेअ (कारीगर) है। आदम अलैहिस्सलाम की सोच में ये बात आई तो फौरन इकरार कर दिया कि ला–इलाहा–इलल्लाह। उस अल्लाह के सिवा कोई खालिक नहीं। इस इकरार के नतीजे में इस तौहीद के सिले में उनसे अल्लाह का फैज़, नूर व वही का इतसाल हो गया।

4. ये नौमौलूद बच्चा पैदा होते ही नबी ए अव्वल, हादी ए अव्वल, मौल्लिम ए अव्वल बन गया। इसी तरह हर इमामे हक पैदायशी इमाम होते हैं। उस बच्चे का नाम है आदम। नबुवत से मखसूस होते ही फौरन अपने साथियों को पढ़ाया, बढ़ाया और उनको तालीम व हिदायत के लिए चारों तरफ भेज दिया ताकि तमाम इन्सानों को जो जाहिल पैदा हुए हैं उन्हे पढ़ाये, बढ़ाये और जन्नत के हकदार बनाये।

5. ज़माना गुज़रता गया और इन्सानों की आमद जारी रही और उनकी तालीम व हिदायत के लिए अव्वल बावा आदम अलैहिस्सलाम के फरज़न्दों में इमामों का सिलसिला जारी रहा यहाँ तक कि हमारे बावा आदम सफीउल्लाह आये वो भी बचपन में ही नबुवत से मखसूस हुए। उनकी नस्ल में नूह नबीउल्लाह के बाद, इब्राहीम खलीलुल्लाह आये। बचपन में आपने सितारे को देखा तो कह दिया कि ये मेरा खुदा है? जब सितारा गुरुब हुआ तो कहा जो गुरुब हो जाए वो खुदा नहीं हो सकता। फिर चांद को देखा तो कहा कि ये मेरा रब है? जब वो भी गुरुब हो गया तो कहा कि अगर मेरा रब मुझे सीधी राह नहीं बतायेगा तो मैं गुमराह हो जाऊँगा। फिर सूरज को देखा तो कहा कि ये मेरा रब है? ये तो बड़ा है, जब सूरज भी गुरुब हो गया तो कहा कि ऐ मेरी कौम मैं तुम्हारे शिर्क से बेज़ार (बरी) हूँ। ऐसा कहकर इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने सितारे, चांद,

सूरज की पूजा को बातिल करार दिया। और कहा कि मैं तो अल्लाह की तरफ मुतवज्जा हूँ जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया। मैं मुशरिक नहीं हूँ, इस तरह इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बचपन में ही अल्लाह सुब्हानहू की तौहीद का इज़हार किया और उसकी तरफ दावत की।

6. इब्राहीम अलैहिस्सलाम के छोटे बच्चे इस्माईल अलैहिस्सलाम का आपने इम्तिहान किया। उनको ज़िबह करने का अल्लाह का हुक्म सुनाया। इस्माईल अलैहिस्सलाम इस इम्तिहान में कामयाब हुए। बाप और बेटा अल्लाह के हुक्म के सामने सर बसुजूद हुए।

7. मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा ने आपको संदूक में बंद करके दरिया में बहा दिया ताकि दुश्मन से बच जाए। मगर दुश्मन की गोद में ही पहुँचे और उसके (फिरौन के) घर में ही परवरिश पाये। एक रोज़ दुश्मन फिरौन ने ग़लत बात कही तो इस बच्चे ने उसको तमाचा मार दिया, आसिया (र.अ.) फिरौन की बीवी ने आपको बचाया। आखिर में अपनी माँ की गोद में भी पहुँचे, नबुवत से मखसूस होते ही फिरौन को तौहीद की दावत दी। आपके वसी हारून अलैहिस्सलाम थे। उनका बेटा फिनहास जो अभी बच्चा था और इमामत वाला था इसलिए यूशअ अलैहिस्सलाम ने उसकी कफालत (सरपरस्ती) की।

8. आपकी नस्ल में याहया अलैहिस्सलाम नबीउल्लाह आए। उनकी शान में अल्लाह ने कहा है कि "व आतैनाहुल हुक्मो सबीय्या 0" हमने उनको बचपन की हालत में ही हुक्म बख्शा।

9. आपके बाद ईसा अलैहिस्सलाम नबीउल्लाह आए। आपकी शान में अल्लाह का कौल है– सूरए अलमायदा में कहा है कि "और जब अल्लाह कहेगा ऐ ईसा बिन मरियम मेरी इस नैमत को याद करो जो तुम पर और तुम्हारी वालिदा पर नाज़िल हुई जब मैने रूहुल कुद्स (जिब्रईल) से तुम्हारी मदद की कि तुम झूले में पड़े हुए और बड़ी उम्र में (यक्सा तौर पर) एक जैसे लोगों से बातें करते थे और मैने तुम्हें किताब व हिकमत पर तौरेत व इन्जील की तालीम दी और जब तुम मेरे इज़्न (रज़ा) से मिट्टी के परिन्दों की तरह खल्क करते थे और उनमें फूँक मारते थे और वो मेरे इज़्न से सचमुच के जानदार परिन्दे बन जाते थे और तुम मेरे इज़्न से जन्मजात

अंधे और कोढ़ी को अच्छा सेहतमंद कर देते थे। और तुम जब मुर्दे को ज़िन्दा करके कब्र से निकाल कर खड़ा कर देते मेरे इज़्न (इजाज़त) से।

10. सुलेमान नबीउल्लाह[अ.स.] अभी बच्चे ही थे कि आपके वालिद दाऊद नबीउल्लाह[अ.स.] की अदालत में किसान और चरवाहे का झगड़ा फैसले के लिए आया। सुलेमान[अ.स.] ने ही इस झगड़े का फैसला सुनाया जिससे आपकी शाने नबुवत का इज़हार हुआ।

11. तमाम अंबियाए किराम[अ.स.] के खातिम सैय्यदना मोहम्मदुल मुस्तफा[स.अ.व.] का बचपन इल्म व हिकमत और सच्चाई में गुज़रा। बचपन में फरिश्तों ने आपके सीने को चीर कर इसमें नूरे नबुवत भर कर पुश्त पर मोहरे नबुवत लगा दी। आपकी अमानत और सच्चाई का इतना चर्चा हुआ कि लोगों में आप 'सादिकुल अमीन' से मशहूर हो गये। जब काअबतुल्लाह की नई तामीर हुई और हज्र–ए–अस्वद (काला पत्थर) को उसकी जगह में रखने के लिए अरब के कबीलों में झगड़ा होने लगा कि कौन पत्थर को जगह पर रखे। अचानक मोहम्मद[स.अ.व.] आ गये। आप छोटे बच्चे थे, सबको खुशी हुई कि लो अस्सादिकुल अमीन आ गये। वो फैसला करेंगे। आप ने सबको कहा कि एक मोटी चादर जैसा कपड़ा लाओ और इस कपड़े के बीच हज्र–ए–अस्वद को रखो फिर सब कबीलों के सरदार इस कपड़े को पकड़ कर हज्र–ए–अस्वद की जगह में ले आये और खुद आपने हज्र–ए–अस्वद को उसकी जगह में रख दिया। इस फैसले से सभी को बहुत खुशी हुई, कि सभी को शामिल किया और आपने वही किया जो आपका हक था।

12. आपके जानशीन मौलाना अली मुर्तज़ा[अ.स.] की विलादत काबा शरीफ में हुई। पैदा होते ही अली[अ.स.] ने शाने इमामत का इज़हार किया। काअबतुल्लाह में विलादत के बाद ज़िन्दगी भर मस्जिदे कूफा में शहादत तक अल्लाह तआला के सिवा और किसी की इबादत नहीं की, सर नहीं झुकाया। बचपन से ही रसूलुल्लाह[स.अ.व.] के मददगार रहे। करीबी रिश्तेदारों की महफिल में अकेले आपने ही कहा कि "या रसूलुल्लाह[स.अ.व.] में आपकी मदद करूँगा।" चालीस बुजुर्गो में से इस एक बच्चे ने ही आपको लब्बैक कहा। रसूलुल्लाह[स.अ.व.] की गोद में ही आपकी परवरिश हुई। आप ही अली[अ.स.] का झूला झुलाते। अपने हाथ से खिलाते–पिलाते। हर वक्त साथ ही रखते। बचपन

से ही आपको इल्म और हिकमत से सैराब करते। अली[अ.स.] फरमाते हैं कि 'यूं तो मेरा रसूलुल्लाह[स.अ.व.] के साथ दिन रात का रहना था। मगर आप हर साल कुछ दिनों गारे हिरा में रहते थे और वहाँ मेरे अलावा आपको कोई नहीं देखता था। इस वक्त आप और जनाब उम्मुल मौमिनीन खदीजा[र.अ.] के घर के अलावा किसी घर की चार दीवारी में इस्लाम न था। अलबत्ता उनमें तीसरा में था और में नूरे वही और रिसालत के नूर को देखता था और नबुवत की खुश्बु सूंघता था। मुझे रसूलुल्लाह[स.अ.व.] सीने पर सुलाते थे अपने बिस्तर पर लिटा देते थे। किसी चीज़ को लुआबे अकदस से पहले नरम कर लेते बाद में मुझे दे देते थे मैं इस तरह से पला–बढ़ा। मैं रसूलुल्लाह[स.अ.व.] के पीछे–पीछे इस तरह चलता जैसे बकरी का बच्चा मां के पीछे–पीछे चले। मैने इस तरह से रसूलुल्लाह[स.अ.व.] की पैरवी की। यहाँ तक की वो वक्त आया कि गारे हिरा में आप पर वही नाज़िल हुई। जब आप पर पहली वही नाज़िल हुई तो मैने शैतान की एक चीख सुनी तो मैने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह[स.अ.व.] ये चीख कैसी है? आपने फरमाया कि– ये शैतान है जो अपने पूजे जाने से मायूस हो गया है। ऐ अली मैं जो सुनता हूँ तुम भी सुनते हो, जो मैं देखता हूँ वो तुम भी देखते हो फर्क इतना है कि तुम नबी नहीं हो बल्कि मेरे वज़ीर व जांनशीन हो। और तुम यकीनन भलाई पर हो। इसके बाद आपने आवाज़ दी कि इधर आओ मैं अल्लाह का रसूल हूँ। "इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम जमीआ"। क्या तुम मानोगे? लोगों ने कहा हाँ हम मानेंगे बशर्त ये कि बय्यनित (निशानी) कोई मौजिज़ा हो। आपने कहा क्या चाहते हो? कहा वो दरख्त जो उस मकाम पर है वो उड़ते हुए आपके पास आये... अमीरुल मौमिनीन फरमाते हैं कि खुदा की कसम जिसके कब्ज़ाए कुदरत में मेरी जान है ऐसा ही हुआ। और पैगम्बर[स.अ.व.] फरमाते हैं कि "मैं इस वादे को पूरा तो कर रहा हूँ कि... मैं इस दरख्त को बुलाता हूँ मगर मैं तुम में से ज़्यादातर को बद्र के कूएँ में देख रहा हूँ कि उनकी लाशें वहाँ पड़ी हुई है। मैं तुम को नज़दीक से देख रहा हूँ बद्र के कूएँ में" ये कह कर दरख्त को इशारा किया। वो दरख्त उड़ता हुआ आया और मैने कहा ऐ अल्लाह के रसूल[स.अ.व.] मैं शहादत देता हूँ कि 'ला इलाहा इलल्लाह'... कोई खुदा नहीं है सिवाए अल्लाह के, ऐ अल्लाह के रसूल मैं आप पर सब से पहले ईमान लाने वाला हूँ और सबसे पहले इकरार करने वाला हूँ कि इस दरख्त ने बहुक्मे खुदा आपकी नबुवत की तस्दीक की और आपके

कलाम की अज़मत व बरतरी दिखाने के लिए वो अम्र वाकिई है। ये सुनकर कुफ्फार ने कहा बल्कि ये परले दर्जे के झूठे हैं और जादूगर है (माअज़ल्लाह)। इनका जादू अजीबो गरीब है और इस चाबक दस्त अम्र पर आपकी तस्दीक इस जैसे ही कर सकते हैं इस जैसे से मुराद 'मैं' था। यानि इस बच्चे के अलावा कोई और भी है आपके मुत्तलिक तस्दीक करने वाला?'

बचपन में अली[अ.स.] के झूले के पास एक बड़ा सांप आया आपने उसको चीड़ दिया। आपकी माँ साहिबा[र.अ.] पुकारी कि हैदर–हैदर अली (सांप को चीड़ने वाला)। बचपन में अबु जहल[ल.] उसकी रस्म के मुताबिक आपकी आंख में काजल लगाने को आया तो एक तमाचा ऐसा मारा कि उसका मुँह टेढ़ा हो गया जो बाद में कभी सीधा न हुआ।

13. आपके दो बेटे इमाम हसन[अ.स.] और इमाम हुसैन[अ.स.]। दोनों को बचपन में आपके नाना रसूलुल्लाह[स.अ.व.] कंधे पर सवार करते, नमाज़ में पुश्त पर सवार हो जाते तो सजदे से सिर न उठाते। एक बुजुर्ग वुजू कर रहे थें दोनों ने उसकी वुजू में खामी (कमी) देखी तो उसको कहा कि चचाजान हम दोनों बच्चे आपके सामने वुजू करे हमारी वुजू में कोई खामी हो तो इस्लाह करे। फिर दोनों ने अच्छी तरह वुजू की तो वो बुजुर्ग समझ गया कि इन बच्चों की वुजू सही है और मेरी वुजू बराबर नहीं है फिर उसने अपनी वुजू की इस्लाह की। देखिये किस तरह बच्चों ने बुजुर्ग की इस्लाह की।

14. इमाम हुसैन[अ.स.] के बेटे इमाम अली ज़ैनुलआबिदीन[अ.स.] बचपन से जुहद व इबादत के आदी थे। 'बहलोल दाना' कहते हैं कि मैने बच्चों को खेलते देखा उनमें से एक बच्चा रो रहा था। मैनें रोने का सबब पूछा और कहा कि ऐ बच्चे क्या मैं तुम्हें खिलौना ला के दूँ? बच्चे ने कहा– क्या अल्लाह ने हमको खेलकूद के लिए पैदा किया है? मैने कहा किसके लिए पैदा किया है? वो बोले– अमल और इबादत के लिए। फिर उसने इबादत के मुत्तलिक अबयात (अरबी शअर) सुनाए। मैने कहा ऐ बच्चे अभी तेरी छोटी उम्र है इस उम्र में बड़े हकीम–अलीम नज़र आ रहे हो। मुझे और अच्छी बात सुनाओ। बच्चे ने दुनिया की फना और मौत के मुत्तलिक अबयात सुनाते हुए रोते हुए आसमान की तरफ निगाह की और मुनाजात

पढ़ने लगे "या मन इलैहिल मुब्तहल या मन अलैहि मुत्तकल या मन इज़ा अमलहुल अमलो लम युख्तिलअमल... बि हक्कि वजहिकल्लज़ी हज्जता अज़्ज़ा व जल्ला इगफिर लिअबदिन कदअता कुल्ला खताईन व खतल" ऐ वो अल्लाह जिसकी तरफ इब्तिहाल है जिसके ऊपर इत्तिकाल (भरोसा) है जिसकी उम्मीद करने वाला नाउम्मीद नहीं होता तेरे वजहे करीम के हक से जिसको तूने छुपाये रखा है तेरे बंदे के ये जो तेरे पास आया है तमाम खता को बख्श दे। इस मुनाजात को पढ़ने के बाद वो बच्चा बेहोश होकर गिर पड़ा मैने उठाया, और कहा ऐ प्यारे बेटे अभी तो तुम बच्चे हो तुम्हारे आमाल नहीं लिखे जाते। वो बोले खामोश रहो मैने मेरी वालिदा को देखा है कि वो बड़ी लकड़ियाँ जलाती है तो पहले छोटी–छोटी लकड़ियाँ जलाती है जिससे बड़ी लकड़ी जलती है। मुझे खौफ है कि मैं जहन्नुम की छोटी लकड़ियों में से न हो जाऊँ इतना कहकर वो बच्चा चला गया। मैने बच्चों से पूछा कि वो बच्चा कौन था? बच्चों ने जवाब दिया कि अली बिन हुसैन[अ.स.]। सलामुल्लाहि अलैहुमा।

15. आपके बेटे इमाम मोहम्मदुल बाकिर[अ.स.] खादिमा (नौकरानी) की गोद में थे। खादिमा मोहम्मद–मोहम्मद कहती थी जिसको जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी[र.अ.] ने सुना जो आंख से माजूर (अंधे) हो गये थे। जाबिर ने पूछा कौन मोहम्मद? जवाब मिला मोहम्मद बिन अली ज़ैनुलआबिदीन[अ.स.]। जाबिर बड़ी तड़प से बच्चे मोहम्मद[अ.स.] को पैर चूम कर गोद में लिया और कहा– ऐ मोहम्मद, आपके नाना मोहम्मद रसूल[स.अ.व.] ने आप पर सलाम भेजा है और कहा है कि मोहम्मद को मेरा सलाम कहना और कहना कि "या बाकिर अलइल्मे बिकरिहो बकरन्" ऐ इल्म के बाकिर (खोदने वाले) इल्म को खोदो और नश्र करो। बच्चा मोहम्मदुल बाकिर[अ.स.] ने कहा वालिकुम अस्सलाम या जद्दना सलामुल्लाह अलैहिम।

16. आपके बेटे इमाम जाफरुस्सादिक[अ.स.] बचपन से ही इल्म व हिकमत के नश्रो–नुमा में मशगुल थे। आपके वालिद–माजिद के हयात में ही आप उलुमाओं के उस्तादे कामिल थे। बचपन में आप अपने उस्ताद से सीख रहे थे (जैसा कि आम बात है ये इमाम बचपन में आम बच्चों की तरह अपने उस्ताद से कुछ तालीम लेते हैं फिर जब आपके वालिद–माजिद आप पर नस करते हैं "नस का मतलब ये है कि पिछले इमाम आने वाले इमाम की

तईन करके वाज़े तौर पर बताये कि मेरा ये बेटा मेरा जांनशीन है।" तो इलाही ताईद से तमाम उलूम पर फाईज़ हो जाते हैं।) तो अहले सुन्नत के बड़े इमाम अबु हनीफा ने आपके उस्ताद को बशर के अफआल का सवाल किया, वो जवाब न दे सके तो आपने उस्ताद की इजाज़त से जवाब दिया कि बशर के अफआल तीन किस्म के हैं। या तो 1. अफआल अल्लाह की तरफ से है बशर की तरफ से नहीं, या 2. बशर की तरफ से है और अल्लाह की तरफ से है, या 3. बशर की तरफ से है अल्लाह की तरफ से नहीं। अब अगर ये अफआल अल्लाह की तरफ से हो बशर की तरफ से नहीं तो फिर अल्लाह बशर को ऐसे अफआल पर अज़ाब क्यूं करेगा कि जो सिर्फ उसकी तरफ से है? 2. अगर ये अफआल दोनों तरफ से हैं तो ज़ोरदार शरीक कमज़ोर शरीक पर क्यूं अज़ाब करेगा? 3. अगर ये अफआल बशर की तरफ से है अल्लाह की तरफ से नहीं तो बशर ज़रूर अज़ाब का मुस्तहिक होगा.. अबु हनीफा ने दूसरा सवाल किया कि ऐ बच्चे गाइत (सण्डास) करने की जगह कौनसी है। आपने कहा घर के आंगन से, फलदार दरख्त से, नदी–नाले से दूर बैठकर गाइत करे और किबला के सामने न हो और किबला की पीठ से न हो... "व अतयनाहुल हुक्म सबीय्या" बचपन में अल्लाह ने आपको हुक्म दिया।

17. आपके बेटे इस्माईल[अ.स.] आपके बाद इमामे हक थे उनके बेटे मोहम्मद[अ.स.] उनके बाद इमाम थे। उनकी उम्र छोटी थी तो उनके लिए मैमूनुलकद्दाह को उनका कफील बनाया था। हर इमाम पैदाइशी इमाम होते हैं। अगर वो छोटी उम्र वाले हो तो उनके वालिद उनके लिए कफील (सरपरस्त) मुकर्रर करते हैं जो उनके बालिग होने पर उनको हुकूमत व इमामत की बागडोर सौंप देते हैं। इक्कीसवें इमाम तैय्यब[अ.स.] के लिए भी यही अमल हुआ था।

18. तेरहवें फातिमी इमाम मौलानल मन्सूर[अ.स.] के पास दो बागबानों के पानी के मुत्तलिक झगड़ा आया तो आपकी हुजूरी में आपके बेटे इमाम मोइज़[अ.स.] ने जो अभी बच्चे थे इस झगड़े का फैसला किया। जिस तरह अली[अ.स.] की हुजूरी में आपके बेटे इमाम हसन[अ.स.] ने जो अभी बच्चे थे फैसला दिया एक एहराम वाले के कज़िये का जिसने ऐहराम की हालत में शतरमुर्ग के अण्डे खा लिए थे।

19. अठारहवें फातिमी इमाम मौलाना मुस्तनसिर बिल्लाह[अ.स.] का बैअत हुआ जब आप सात साला बच्चे थे। एक रोज़ आपको किताबत (लिखना) सिखाने वाले नस्तालीक ने खत सिखाने के लिए आपके हाथ पर हाथ रखा तो आपने कहा ये हाथ वो है जिस पर कोई हाथ नहीं आ सकता, हाथ हटा लो। फिर आपने बेहतनरीन अच्छे खत लिख के बताया। इमामत की शान का इज़हार किया।

बच्चों की तालीम व तरबियत

20. अल्लाहसुब्हानहू का कौल है कि "अल्लाह ने तुमको तुम्हारी माँ के पेट से निकाला, ऐसी हालत में कि तुम कुछ नहीं जानते थे।" मोहम्मद रसूल[स.अ.व.] का कौल है कि हर बच्चा जब पैदा होता है तो इस्लाम की फितरत पर पैदा होता है, फिर उनके माँ बाप जैसे होते हैं, वैसे उनको बना देते हैं, यहूद, निसरानी या मजूस वगैरह। इस्लाम की फितरत है एक अल्लाह को मानना (तोहीद)। बच्चा पैदा होता है तो अपनी ज़बान से बोलता नहीं मगर अपनी हालत यानि अपनी पैदाइश से ये कहता है यानि लिसानुल हाल से बोलता है कि मैं नहीं था और अब हुआ और मैने खुद अपने आप को पैदा नहीं किया तो साबित हुआ कि मेरे खालिक अल्लाह ने मुझे पैदा किया यही है इस्लाम की फितरत और इसी फितरत पर अल्लाह ने सभी को पैदा किया है। ला इलाहा इलल्लाह।

21. जब अल्लाह ने सबको जाहिल पैदा किया तो उसकी तालीम और तरबियत के लिए ऐसे अश्खास को भी पैदा किये जो उनकी तालीम और तरबियत का भी इन्तज़ाम कर सके, वो है अल्लाह के अन्बिया और औलिया जिसकी ज़िक्र इस किताब के शुरू में आ चुकी। जिनको अल्लाह ने आम पैदाइश से हटकर निराली, इम्तियाज़ी पैदाइश अता की। अपनी खास कुव्वत बख्शी। इन अल्लाह वालों ने अल्लाह की हिदायत अल्लाह के अम्र के मुताबिक बच्चों की तालीम व तरबियत का इन्तज़ाम, एहतमाम किया और बच्चों को मुहज़्ज़ब (तहज़ीब वाले) बनाने की कोशिश की ताकि वो मआद (इस दुनिया के बाद आखिरत की ज़िन्दगी) और मआश (इस दुनिया की ज़िन्दगी) के उमूर में सालेह व कामयाब हो। ये बचपन उनके माँ–बाप के पास अल्लाह की अमानत है, उनके दिल नफीस जौहर है, जो

हर नक्शो–निगार से खाली हर किस्म की मालुमात से खाली, साफ–सादा और हर किस्म के नक़्श को कुबूल करने को तैयार। जिस तरफ उनको ले जाओगे जाने के लिए काबिल। अगर उनको अच्छी तालीम दोगे अच्छे नेक हो जाऐंगे। दुनिया और आखिरत में सआदतमंद बन जाऐंगे। मुल्क और दीन के लिए फख्र साबित होंगे। उनके माँ–बाप और उस्ताद उनकी अच्छी तालीम और तरबियत देने के नतीजे में अज़ीम सवाब देने के हकदार होंगे। खुदा नाख्वास्ता इन बच्चों की जो मासूम है बुरी तालीम व तरबियत हुई और वो आवारा छोड़ दिये गये जानवरों की तरह तो वो हलाक होंगे, बदकाम, बदनाम होंगे और उनको इस तरह आवारा छोड़ देने वाले माँ–बाप बदनाम और गुनाहगार होंगे। अल्लाह सुब्हानहु का कौल है कि "या अय्योहल लज़ीना आमनू कू अनफुसाकुम व अहलीकुम नारन् व कू दुहन् नासो वलहिजारा" ऐ वो लोग जो ईमान लाए अपनी जानों को और अपने अहल व औलाद को इस जहन्नुम से बचाओ जिसका ईंधन लोग और पत्थर है। अर्ज़ हुआ कि या रसूलुल्लाह[स.अ.व.] हमारे अहल व औलाद को हम जहन्नुम से किस तरह बचाए? आपने फरमाया, तुम नेक आमाल (काम) करते हो वही नेक आमाल की उनको तालीम और तरबियत दो ताकि वो भी तुम्हारे जैसे नेक हो जाए और तुम्हारी तरह वो जहन्नुम से बच जाए और जन्नत में तुम्हारे साथ रहे, जिस तरह दुनिया में साथ रहते थे। माँ–बाप बनने वाले मर्द और औरत हलाल पाकीज़ा गिज़ा लें, हलाल पाकीज़ा शरई निकाह से हमबिस्तरी करे जिससे पाकीज़ा माद्दा (मनी) से हमल रहे, दौराने हमल औरत हलाल पाकीज़ा गिज़ा लेती रहे जिससे बच्चे की नशो–नुमा हो, विलादत के वक्त नौज़ायदा (नये पैदा हुए) बच्चे के दांए कान में अज़ान बांए कान में इकामत कहे, आयतुल कुर्सी की तिलावत बच्चे को सुनाए। ये अमल बच्चे को पाक करने के लिए हैं। सातवीं (छठे दिन) रात को बच्चे का नाम रखे ये नाम अल्लाह और अल्लाह वालों के बेहतरीन नामों में से हो ताकि ऐसे नाम वाले की वजह से घर बरकत वाला हो। आजकल उल्टे–सुल्टे ऐसे नाम रखे जिससे ईमान की अलामत नहीं रहती। शरीयते मोहम्मदी में नाम की बहुत अहमियत है। अल्लाह वाले अन्बिया और औलिया के नाम का इन्तखाब अल्लाह की तरफ से हुआ है। याहया नाम अल्लाह ने, ज़करिया नबी के बेटे को दिया, खुशखबरी के साथ। ईसा रूहिल्लाह ने हमारे नबी[स.अ.व.] की खुशखबरी देते हुए कहा

उनका नाम अहमद है। आप अहमद[स.अ.व.] ने कहा मेरे बाद महदी आऐंगे जिनका नाम मेरे नाम से मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह होगा। अली[अ.स.], फातिमा[अ.स.], हसन[अ.स.] और हुसैन[अ.स.] के नाम अल्लाह की तरफ से आए। सातवें, चौदहवें या इक्कीसवें दिन सर मुंडन के बाद अकीका की कुरबानी करे। इस सुन्नते रसूल से बच्चे की जान व जिस्म की हिफाज़त होती है। लड़के की खतना बहुत जल्दी और लड़की की खतना सात साल बाद की जाए, ये खतना सुन्नते रसूल है। फितरत है असली पैदाइश है। दूध पिलाने की मुद्दत दो साल है इस मुद्दत में माँ हलाल पाकीज़ा गिज़ा लेती रहे, जिससे बच्चे का दूध पाकीज़ा हो, जिस दूध से उसकी नशो–नुमा होती है इसके बाद माँ बाप और बच्चों की गिज़ा शरए मोहम्मदी के मुताबिक हलाल हो, हलाल चीज़ व दूध में बरकत है हराम में नहीं। माँ–बाप बच्चों को आग से, हर नुकसान पहुँचाने वाली चीज़ से बचाते हैं, बहुत ज़्यादा ऊला (बेहतर) है उनको जहन्नुम की आग से बचाए। शरीयते मोहम्मदी पर अमल करने पर पाबन्द करे। बेहतरीन अखलाक से उनको आरास्ता करे। अल्लाह के अन्बिया और औलिया, पंजेतन पाक, उनकी आले–हक के अइम्मा और इमामुज़्ज़मान की विलायत और मुहब्बत वाले बनाये। बचपन में ही सादा जीवन के आदी बनाये। सादगी बकौले रसूल[स.अ.व.] ईमान का एक हिस्सा है। (ज़्यादा शर्मीला इन्सान ज़्यादा अक्लमंद माना गया है।) बच्चों को बदकार बच्चों से दूर रखें। सोहबत का असर बहुत होता है। जैसी सोहबत होगी वैसे ही वो हो जाएंगे। जब बच्चों में शर्म तमीज़ की हालत ज़ाहिर हो पूरी तरह अहतियात बरतने की ज़रूरत है। ऐसे काम से वो शर्म महसूस करने लगे जो सही न हो तो समझो के अब उनमें अक्ल की रोशनी पैदा होने लगी है। इस अक्ल से वो समझने लगा है कि ये बात सही है और ये गलत। इसलिए इसके करने से वो शर्माता है। अल्लाह सुब्हानहू की तरफ से ये अक्ल बच्चों की लिए तोहफा है। अफआले अखलाक को ऐअतिदाल पर लाने के लिए खुशखबरी है कि बालिग होने तक दिल की सफाई के साथ अक्ल कामिल हो जाए जबकि वो हर हालत में इस्तिकामत पर रहे। बच्चे को खाने के आदाब सिखाना ज़रूरी है। उसको बताया जाए कि दाएं हाथ से, पांच उंगलियों से निवाला बनाकर खाने से पहले 'बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम' कहे। थाल में अपने पास जो हो वो खाए, इधर–उधर हाथ न फैलाये, खाने में पहल न करे, इधर–उधर देखे नहीं कि

कौन क्या खाता है, खाने में जल्दी न करे, बराबर चबा कर खाए, हाथ और कपड़े गंदे न करे, कभी–कभी बिना तरकारी के रोटी खाने की भी आदत डाली जाए ताकि कभी तरकारी न मिलने पर परेशान न हो, ज़्यादा खाने से बचाया जाए, ताकि पेटु न बन जाए। हर तरह का खाना खाने की आदत डाली जाए ताकि खाना मोटे अनाज का होने से वो परेशान न हो, संतोष की आदत डाली जाए। उसे बताया जाए की खाने से पहले 'बिस्मिल्लाह...' और खाने के बाद 'अलहम्दो लिल्लाह' कहे। खाने को, कैसा भी हो नुक्स ना निकाले। खाना खिलाने वाले के हक में दुआ करे। खाने के पहले और बाद में हाथ धोए। पालती मार कर बैठे नहीं ये जब्बार की बैठक है, सर खुला न रखे, हर हाल में अल्लाह की नैमत पर शुक्र करे। सफेद कपड़े पहनने की आदत हो रंगीन व रेशमी नहीं। सोना–चांदी और रेशम औरतों के लिए है। ऐसे बच्चों से बच्चे को दूर रखा जाए जो अच्छा खाना, अच्छा कपड़ा, ऐश, खेल–कूद, फिजूलियात के आदी हो। अगर बच्चे को महम्मल रखा जाएगा तो वो बदअखलाक, झूठा, हासिद, चोर, चुगलखोर, झठ बेशर्म, बकवासी हो जाएगा। सबसे पहले बच्चे को कुरआन की तालीम दी जाए, साथ में हदीसें, भले लोगों की तारीखें, अन्बिया–औलिया के अखबार, उनकी पाकीज़ा ज़िन्दगी के हालात पर उनको आगाह करना चाहिए ताकि उसके दिल में नेक लोंगो की मुहब्बत पैदा हो और वो उनके नक्शे कदम पर चले। बच्चे को 'लाहौल वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम' हमेशा बार–बार पढ़ते रहना चाहिए। औलिया उल्लाह की नसीहतें, उनके अशआर, मुनाजात पढ़ने की तालीम दी जाए। फूहड़ इश्किया गज़लें, कानफोड़ म्युज़िक, टी.वी. पर गंदे प्रोग्रामों से बच्चे को बचाने की बहुत ज़रूरत है। इससे बदअखलाकी के साथ तालीम और तामीरी कामों में बहुत नुकसान होता है। ज़बरदस्त फसाद होता है। बच्चे को समझाया जाए कि वो नींद से उठे तो वो सबसे पहले वुज़ू करे, नमाज़ पढ़े, जितना हो सके कुरआन की तिलावत करे, माँ–बाप, और बुज़ुर्गों का हाथ–पैर चूम कर सलाम करे। उनकी दुआएं लें। फिर नाश्ता करके अपना काम करे। बुज़ुर्गों का एहतराम करना, उनकी पैरवी करना, वो जो कहे करना, अपनी मनमानी नहीं करना बहुत ज़रूरी है। बच्चा कोई अच्छा काम करे तो शाबाशी देना, उनकी अच्छाई का इज़हार करना, ईनाम देना ज़रूरी है। बच्चा अगर कोई गलत काम कर

बैठे तो बेहतरीन तरीके से अकेले में समझाना, उसका पर्दाफाश न करना बहुत अहम है। खुसूसन् जब बच्चा खुद अपनी गलती को छुपाता हो और नदामत करता हो तो उसकी गलती को बार–बार दोहराना न चाहिए कि वो दिलेर न हो जाए। वो शर्म वाला है तो खुद–बखुद सुधर जाएगा। शर्म बहुत ही फायदामन्द है। बच्चे के दिल में माँ–बाप और बुजुर्गों की हैबत और रौब भी हो ताकि वो उनकी तालीमात को कबूल करता रहे। दिन में सोये नहीं जिससे सुस्ती आये। रात को अच्छी तरह आराम करे। जल्दी आराम करे जल्दी उठे। कोई काम छुपा कर नहीं करे। इसमें गलत होने का अंदेशा रहता है। चहलकदमी की भी ज़रूरत है। बच्चा अपने दोस्तों पर किसी चीज़ से जो उसके पास हो फख्र न करे, अपनी बड़ाई न करे, घमंडी न करे। हर एक के साथ तवाज़ों नम्रताई करे। बातचीत में लताफत की आदत हो। हर किसी से उसकी चीज़ें छीनने की आदत न हो। समझ लें कि इज़्ज़त देने में है लेने में नहीं। सोना–चांदी, फाखिर लिबास से बच्चे को दूर रखा जाए। कहीं इधर–उधर थूंके नहीं। उबासी, आलस, मरोड़ में भी एहतियात करे किसी को पीठ न बताये। पैर पर पैर न रखे। ठुड्डी के नीचे हाथ रख कर न बैठे। बैठने की अदब सिखाई जाए। बेशर्मी से ज़्यादा बक–झक न करे। झूठी कसम न खाए। किसी से बात करने में पहल न करे। किसी की बात का जवाब बेहतर तरीके से दे। बोलने के बजाय सुनने की आदत ज़्यादा हो। बड़ों की बातों के बीच बात न काटे। गाली–गलोच, बदकलामी से बिल्कुल दूर रहे। माँ–बाप भी उनके सामने किसी को गाली–गलोच न करे, वरना वो गाली बोलने वाला बच्चा हो जाएगा। बकवासी बच्चों से बिल्कुल दूर रखा जाए। माँ–बाप या उस्ताद अदब देने की खातिर मारे भी तो चीख पुकार न करे। माँ–बाप को भी लायक है कि बच्चे से हमेशा प्यार से काम ले, मार–पीट की आदत न हो। वरना बच्चा बड़ा होकर सख्त और सरकश हो जाएगा। मौलाना अली अलैहिस्सलाम ने कहा है कि– "अपनी औलाद को बचपन में ही आदाब पर आमादा करो ताकि वो जब बड़े हो तब तुम्हारी आंख ठंडी हो, बचपन में बच्चों में जो आदाब इकट्ठी की जाए, सिखाई जाए वो मज़बूत हो जाती है जिस तरह कि पत्थर में नक्शकारी की जाए।" पढ़ाई, होमवर्क करने के साथ खेल, लतीफ खेल–कूद भी ज़रूरी है ताकि दिमाग बोझिल न बन जाए। पढ़ाने में भी बच्चे की सेहत का ख्याल रहे। वरना वो पढ़ाई से

उक्ता जाएगा। बच्चे को माँ–बाप, उस्ताद और बड़ों की फरमाबरदारी की तालीम दी जाए। तहारत, नमाज़, रोज़ा की आदत डाली जाए। हर तरह से बच्चे को खुशअखलाक बनाया जाए। ऐसा कि वो दीन और मुल्क के लिए बाइसे फख्र हो जाए। यहाँ तक कि बालिग हो तो उसकी अक्ल कामिल हो तब माँ–बाप पर ये बात ज़रूरी है कि अपने बालिग बच्चे को रूहानी उस्ताद के पास ले जाए। ताकि दावतुल हक की रस्म के मुताबिक उसका अहद–मीसाक लें। रसूलुल्लाह[स.अ.व.] इस्लाम का जो पैगाम लाए वो उसको सुनाया जाए ताकि इस्लामी उसूल पर वो अपनी ज़िन्दगी को पाकीज़ा बनाये। दुनिया के बाद आखिरत की ज़िन्दगी की हकीकत उसको बताई जाए ताकि दुनिया में रह कर आखिरत का तोशा ले। शरअे मोहम्मदी की पाबन्दी करें। मोहम्मद[स.अ.व.] और आले मोहम्मद[स.अ.व.] की, इमामुज़्ज़मान[अ.स.] की मोहब्बत और वलायत के साथ इबादत करे। इस तरह बच्चे की तालीम और तरबियत हो ताकि मआद और मआश दोनों में वो सआदतमंद हो जाए। अल्लाह के यहाँ ज़्यादा बइज़्ज़त शख्स वो है जो ज़्यादा मुत्तकीं हो। मुत्तकीं लोगों के लिए ही नेक अंजाम है।

प्यारे बच्चों जिगर पारों

1. याद रखो कि हमारे प्यारे नबी मोहम्मदुल मुस्तफा[स.अ.व.] ने फरमाया कि कहो "ला इलाहा इलल्लाहो मुहम्मदुन् रसूलुल्लाह" फिर फरमाया जो शख्स इस कलिमते तैय्यबा को पढ़े वो मुस्लिम हो गया। अब इस कलिमते तैय्यबा को इखलास से पढ़े तो वो मौमिन हो गया। जन्नत का मुस्तहिक हो गया। किसी ने सवाल किया या रसूलुल्लाह[स.अ.व.] इखलास की क्या मानी? आपने फरमाया इस कलिमा के हुदूद (हदबंदियां– ये हदंबदिया अहकाम की भी है और मरातिब की भी) की मअरिफत करना और उसके हुकूक को अदा करना।

हुदूद अल्लाह सुब्हानहू के बाद उस रूहानी आलम के मरातिब कलम (पहला फरिश्ता अक्ले अव्वल), लोह (दूसरा फरिश्ता अक्ले सानी) इस्राफील, मीकाईल, जिब्रईल और तमाम फरिश्ते, उनको पहचानने के बाद इस जिस्मानी आलम के मरातिब नबी, वसी, इमाम हुज्जत, बाबुल अबवाब, दाईल जज़ीरा, दाईयुल बलाग, दाईयुल मुतलक, माजून, मुकासिर

वगैरह–वगैरह उनकी मारिफत करना कलिमते तैय्यबा के हुदूद की मारिफत करना है। जिनकी वलायत और मुहब्बत फर्ज़ है।

हुकूक : कलिमते तैय्यबा के हुकूक इस्लाम के 7 दआइम (सुतून) वलायत, तहारत, सलात, ज़कात, रोज़ा, हज और जिहाद। ये है इस्लाम के दआइम फराइज़। इसके साथ बारह सुन्नत– 1. बिर्रुल वालिदेन (माँ–बाप के साथ अच्छा सुलूक करना), 2. बच्चों की तालीम–तरबियत (तरबियतुल औलाद), 3. हुस्न मुआशरतुल अज़वाज (बीवीयों के साथ अच्छा सुलूक करना), 4. हिफजुल जार (हमसायों/पड़ोसियों के साथ अच्छा सुलूक करना), 5. इफशाउस सलाम (खुले तौर पर सलाम बोलना), 6. अर्रिफको बिलममालीकि (गुलामों और नौकरों के साथ अच्छा सुलूक करना), 7. सिलतुल अरहाम (रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करना), 8. सिलतुल अख्वान (भाईयों के साथ अच्छा सुलूक करना), 9. अलअम्रो बिल मअरूफ वन्नहयो अनिल मुनकर (अच्छे काम का हुक्म करना और बुरे काम से रोकना), 10. अस्सदको फिल मवातिन (हर जगह सच बोलना, झूठ से बचना), 11. इतआमुल अतआम (खाना खिलाना), 12. इयादतुल मर्ज़ा (बीमारों की तबियत पुर्सी करना)। ये है रसूल[स.अ.व.] की बारह सुन्नत। ये है इस्लाम और ईमान के हुदूद व हुकूक। कलिमते तैय्यबा का इखलास। "कि नहीं है कोई मआबूद मगर अल्लाह और मोहम्मद[स.अ.व.] अल्लाह के पैगम्बर है आप आखिरी पैगम्बर है अब कोई नबी नहीं आयेगा", अब कयामत आयेगी। अल्लाह की इलाहियत की और मोहम्मद[स.अ.व.] की शहादत देना ईमान है इसके साथ ये शहादत देना कि जन्नत हक है, जहन्नुम हक है, बअस (कब्र से उठना) हक है और कयामत हक है जो आने वाली है, इसमें कोई शक नहीं। इसके साथ ये तस्दीक करना कि तमाम अन्बिया और रसूल हक है, इसके साथ इमामों की तस्दीक करना, इमामुज़्ज़मान[अ.स.] की मअरिफत और तस्दीक करना। उनके हुक्म को तस्लीम करना और अल्लाह के तमाम फराइज़ मुताबिक अमल करना, जिनको अल्लाह ने बन्दों पर फर्ज़ किया है और जिन–जिन चीज़ों से अल्लाह ने मना किया है उनसे बाज़ (रुके) रहना। इमामुज़्ज़मान[अ.स.] की ताअत करना और आप जो कहे उसे कबूल करना, ये है वो ईमान कि जिसके बगैर अल्लाह तआला कोई अमल कुबूल नहीं करेगा। ये ईमान तमाम आमाल में अअला अशरफ (सबसे बढ़कर) और बुलन्द तरीन है।

2. प्यारे बच्चों! याद रखो के ईमान और इस्लाम में फर्क है। एक ही नहीं है। ईमान इस्लाम का शरीक है। इस्लाम ईमान का शरीक हो ये ज़रूरी नहीं। इस्लाम (झुकना, सौंपना सलामती के साथ) ज़ाहिर है और ईमान (मान लेना) बातिन। ⊙ जैसे ये अन्दर का दायरा ईमान है और बाहर का दायरा इस्लाम है। जो मोमिन है वो मुस्लिम तो है ही और जो मुस्लिम है वो ज़रूरी नहीं कि मोमिन भी हो। इस्लाम इकरार है और ईमान इकरार और मअरिफत है। अल्लाह, अल्लाह के नबी और इमाम का इकरार और मअरिफत करने वाला मोमिन है।

3. प्यारे बच्चों! याद रखो के इन सात दआइमुल इस्लाम में अव्वल वलायत है वली (सरपरस्त, मौला, मालिक, हाकिम) और वलायत के ज़रिये ही दीगर दआइम की मअरिफत होती है। इसी पर इस्लाम की बुनियाद खड़ी है। अल्लाह सुब्हानहू का कौल है कि "इन्नमा वलीयिकुमुल्लाहो व रसूलहू वल्लज़ीना आमनुल्लज़ीना युकीमूनस्सलाता व यूतूनज़्ज़काता व हुम राकिऊन" यकीनन् तुम्हारा वली अल्लाह और अल्लाह के रसूल और वो है जो ईमान लाये, जो नमाज़ कायम करते हैं, ज़कात देते है ऐसी हालत में कि वो रूकू में हैं। ये आयत अली अलैहिस्सलाम की शान में उतरी जब आपने रुकू की हालत में साइल को अंगूठी दी। इस आयत में अल्लाह ने वली की वलायत फर्ज़ की है। इस मुजमल, मुख्तसर बयान की तफसील में अल्लाह ने ये आयत गदीरेखुम में उतारी। "या अयुहुर्रसूलो बल्लिग मा उन्ज़िला इलयका मिर्रब्बिक व इनलम तफअल फमा बलगता रिसालतहू वल्लाहो यअसिमोका मिनन्नास" ऐ पैगम्बर रब की तरफ से जो फरमान उतारा गया उसको पहुँचा दो अगर नहीं पहुँचाआगे तो आपने उसकी रिसालत नहीं पहुँचाई और अल्लाह आपको लोगों से बचायेगा। इस ताकीदी फरमान से रसूलुल्लाह[स.अ.व.] ने अली[अ.स.] की वलायत का ऐलाने आम किया। अली[अ.स.] की मकामे मनज़िलत की वज़ाहत की। अली[अ.स.] को दोनों हाथों पर ऊँचा उठाकर फरमाया "मन कुन्तो मौलाहो फ हाज़ा अलीय्युन मौलाहो" ऐ मुसलमानों में जिनका मौला था अब ये अली उनका मौला है। फिर अली[अ.स.] के हक में दुआ की और तमाम हाज़रीन मुसलमानों से अली[अ.स.] के लिए बैअत (मीसाक) लिया। बताइए इस बैअत के बराबर कौनसी बैअत होगी। ये है अली अमीरुल मौमिनीन की वलायत, खिलाफत और इमामत व वसायत पर नस्सेजली (कोई नबी या इमाम या दाई अप-

बाद आने वाले अपने जांनशीन का ऐलाने आम करे उसे नस्सेजली कहते हैं।) दुश्मनाने अली हज़ारहा छुपाने की कोशिश करे, मगर उनकी ये नापाक कोशिश रोशन सूरज पर धूल फेंकना है।

4. प्यारे बच्चों! याद रखो, मौलाना अली[अ.स.] के बाद आपके फरज़न्द इमाम हसन[अ.स.] और इमाम हुसैन[अ.स.], फिर इमाम हुसैन[अ.स.] के फरज़न्दों में से अइम्मतित्ताहिरीन यहाँ तक कि इक्कीसवें इमाम मौलना तैय्यब[अ.स.] की और आपके फरज़न्दों में बाप के बाद बेटे अइम्मा[अ.स.] जो कयामत तक आते रहेंगे और इमामुज़्ज़मान[अ.स.], इन सबकी ताअत, वलायत, मोहब्बत फर्ज़ है वाजिब है। अल्लाह सुब्हानहू का कौल है कि "या अय्योहल लज़ीना आमनु अतीउल्लाहि व अतीउर्रसूला व उलिल अम्रि मिनकुम" ऐ वो लोग जो ईमान लाये, अल्लाह की, अल्लाह के रसूल की और उलिल उम्र की इताअत करो। ये आले मुहम्मद[स.अ.व.], अइम्मति उलिल अम्र है जिनकी ताअत अल्लाह और अल्लाह के रसूल[स.अ.व.] की ताअत से जुड़ी हुई है। यही सादिकीन है, अहले ज़िक्र है, वर्रासिखूनि फिल इल्म (पुख्ता इल्म वाले) है व उम्मते वस्त जिन पर नबी करीम[स.अ.व.] के साथ सलवात पढ़ना फर्ज़ वाजिब है। ये लोग ही हकीकी आले मोहम्मद[स.अ.व.], उम्मते मुहम्मद है। उनमें से एक इमाम नहीं गुज़रते मगर अपने बेटे आने वाले इमाम आपके जांनशीन पर नस करके गुज़रते हैं। रसूलुल्लाह[स.अ.व.] के बाद गदीरेखुम वाली मौलाना अली[अ.स.] की नसजली का इन्कार करते हुए अबु बक्र साहब को लोगों ने कायम किया, वो बातिल है, गलत है। हुसैनी आल के अइम्मा 'अइम्मति इस्माईली' जो नस ब नस कायम हुए वो हक है, ये सब अइम्मति हक अल्लाह के नेक बंदे, अल्लाह के खुलफा, रहनुमाए हक अल्लाह और अल्लाह के बंदों के दरम्यान वसीला, वास्ता है। आलिहा खुदा या गैब के उलमा नहीं है, जैसा कि कुछ लोग ऐसी गलत बात करते हैं। ये सब बशर है अलबत्ता बशर में सब अअला अशरफ, बुलन्द मकाम, अल्लाह के बरगज़ीदा, मुस्तफी बन्दे है। सलामुल्लाह अलयहिम। उन्होनें बन्दों को नसीहत देते हुए कहा कि ऐ हमारे शिया तुम खामोश रहकर हमारे दाई बनो, हमारी तरफ लोगों को बुलाओ मतलब ये कि तुम हमारी नेक सीरत पर चलो ताकि लोग समझे कि कितने अच्छे और नेक हैं ये लोग। तो इनके इमाम कितने अच्छे और नेक होंगे। ये समझ कर लोग हमारे मुहिब बनेंगे। हमारी तरफ आयेंगे... इन

अइम्मा की मुहब्बत फर्ज़ है। नबीए करीम[स.अ.व.] ने अपनी आल रिश्तेदार यानि अली[अ.स.], फातिमा[अ.स.], इमाम हसन[अ.स.] और इमाम हुसैन[अ.स.] और उनकी औलाद अइम्मा हक की मुवद्दत (मोहब्बत) का सवाल किया और फरमाया मेरी इतरत (अहले बेत) से वाबिस्ता रहो। उन्हीं से इल्म हासिल करो या उनसे इल्म हासिल करो जिन्होनें इनसे इल्म हासिल किया हो ताकि जहन्नुम से आज़ाद हो जाओ। इल्म का हासिल करना हर मुस्लिम मर्द और मुस्लिमा औरत पर फर्ज़ है। जो इल्म दुनिया और आखिरत की सआदत बख्शे वो आले मुहम्मद[स.अ.व.] का इल्म है। दुनयावी उलूम के साथ दीनी इल्म की तालीम फर्ज़ वाजिब है। बेहद जरूरी है।

5. प्यारे बच्चों! याद रखो कि तहारत पाक साफ रहना फर्ज़ है। पाक पानी से वुज़ू करो, गुस्ल करो "ला सलाता इल्ला बितहूरिन" तहारत (पाकीज़गी) के बिना कोई नमाज़ जायज़ नहीं। पानी न मिले तो पाक सूखी मिट्टी से तय्यमुम करो। हर हाल में पाक रहो, साफ–सुथरे रहो। शराब, तम्बाकू, सभी किस्म का नशा, जुआ नापाक है, इससे दूर रहो। जनाबत, एहतेलाम, हैज़, ज़चगी, मैय्यत का गुस्ल फर्ज़ है। इस जिस्मानी तहारत के साथ नफ्सानी तहारत फर्ज़ है। यानि शक, शिर्क, निफाक, कुफ्र, ग़लत अकीदा से दूर रहना।

6. प्यारे नौनिहालों! बिल्कुल ज़हननशीन कर लो की रोज़ाना पांच नमाज़े, ज़ोहर, अस्र, मगरिब, इशा और फज्र फर्ज़ वाजिब है। इसके साथ सुन्नत, ततव्वअ की नमाज़ें भी है इनको पाबन्दी से अदा करो। नबी करीम[स.अ.व.] ने फरमाया कि तुम्हारी जानों को जहन्नुम से छुड़ाओ, अच्छे अमल करके और तुम्हारे तमाम आमाल में अफज़ल अमल नमाज़ है। बिना नमाज़ के सारे अमल बेकार है। नमाज़ दीन का सुतून है, मुँह है। नमाज़ बेहतरीन कुर्बानी है। तमाम बरकतों का मजमुआ नमाज़ है। अफसोस कि आज ज़्यादातर लोगों ने नमाज़ छोड़ दी।

खुदा से तुझको मुहब्बत नहीं तअज्जुब है,
तुझे रसूल[स.अ.व.] से उल्फत नहीं तअज्जुब है।
कलामे पाक से रगबत नहीं तअज्जुब है,
तुझे मज़ाके तिलावत नहीं तअज्जुब है।

तुझे ख्याले कयामत नहीं तअज्जुब है,
तुझे अज़ाब से दहशत नहीं तअज्जुब है।

तुझे नजात की हसरत नहीं तअज्जुब है
तुझे नमाज़ की फुरसत नहीं तअज्जुब है।

अजब नहीं कि लईनों में नाम हो तेरा,
अजब नहीं की जहन्नुम मुकाम हो तेरा।

नमाज़ इस्लाम में सबसे अहम सबसे मुकद्दम है,
ये फर्ज़ अवलीन है, दीने हक का रूकने आज़म है।

7. प्यारे बच्चों! याद रखो कि साल में एक बार माल की ज़कात अदा करना फर्ज़ है। चालीस रुपये पर एक रुपया यानि 2.5%, पांच ऊँट में एक बकरा, तीस गाय में एक गाय, चालीस बकरों में एक बकरा इस तरह ये इब्तिदाई निसाब है। जिसको आठ किस्म के लोगों में तकसीम किया जाए। ईदुल फित्र के पहले फितरा, इमाम का सिला, खुमस अदा किया जाए। ज़कात से माल और जान की सफाई है। हर बार सदका (खैरात) करते रहो, गरीबों की मदद करते रहो जिससे शिफा, बरकत और बला से दूरी हासिल हो।

8. प्यारे बच्चों! हर साल शहरे रमज़ान मुबारक में तीस रोज़ा फर्ज़ वाजिब है। दिन में रोज़ा, रात में इफ्तारी, दिन में सच्ची नीयत से खाने–पीने से, हम बिस्तरी से दूर रहने के साथ–साथ तमाम हराम कामों से दूर रहना रोज़ा है। नबी करीम[स.अ.व.] ने फरमाया कि अल्लाह तआला कहता है कि रोज़ा मेरे लिए है और मैं खुद इसका बदला दूंगा। शहरे रमज़ान अल्लाह का महीना है, इसकी तेइसवी रात लैलतुल कद्र जो हज़ार महीने से अफज़ल है। ये महीना सब्र का, गुनाहों की बख्शिश का, जहन्नुम से आज़ाद होने का महीना है। कामिल तीस दिन बाद ईदुल फित्र है।

9. इस माह मुबारक की इक्कीसवीं तारीख को अली[अ.स.] वफात पाये। आप आखिरी वसीयतों में बार–बार ये कहते थे, देखो मेरे बच्चों तकवा से काम लेना। देखो मेरे बच्चों यतीमों का ख्याल रखना। देखो मेरे बच्चों मिस्कीनों का ख्याल रखना। देखो मेरे प्यारे बच्चों कुरआन का ख्याल

रखना। देखो मेरे प्यारे बच्चों कहीं कुरआन पर अमल करने में तुम्हारा गैर तुमसे आगे न बढ़ जाये। देखो मेरे बच्चों अल्लाह व अल्लाह के रसूल[स.अ.व.] और मोमिनीन की खैर ख्वाही का ख्याल रखना।

10. प्यारे बच्चों खास याद रहे कि तुम्हारी पूरी ज़िंदगी में एक बार काअबतुल्लाह (मक्का मोअज़्ज़मा) का हज और उमरा फर्ज़ है। इब्राहीम खलीलुल्लाह[अ.स.] ने बहुक्मे खुदा काबा बनाने के बाद काबा का हज करने का अल्लाह के इस घर पर आने का ऐलाने आम किया। रसूलुल्लाह[स.अ.व.] हमारे प्यारे नबी करीम ने उसी की बिना पर हज का ऐलाने आम किया। जब तन्दरुस्ती हो, रास्ते में अमान हो, सफर के खर्च, बाल–बच्चों के खर्च का पूरा इंतज़ाम हो तो हज करना वाजिब हो जाता है। अल्लाह के मेहमान बनकर बैअतुल्लाह हराम का तवाफ, सफा–मरवा की सई, आबे ज़मज़म से सैराबी, मिना, अराफात, मुज़दलिफा, रमी जुमरा, कुर्बानी और सर मुंडन के मनासिक की अदाई, ज़िलहिज्जा की नवीं तारीख अरफा के दिन अराफात जब्लुर्रहमत पर वक्फा, दुआओ, तिलावत, इबादत खैरात की बरकात से सरफराज़ होने वाले हुज्जाज खुशनसीब। हज उमरा के बाद मदीना मुनव्वरा नबी करीम[स.अ.व.] की मस्जिद में नमाज़, आप की ज़री मुबारक की ज़ियारत, जन्नतुल बकीअ में मौलातिना फातिमतुज़्ज़हरा[अ.स.] और अइम्मा[अ.स.] की ज़ियारत, नजफे अशरफ में आका अली[अ.स.] की ज़ियारत, कर्बला में आका हुसैन[अ.स.] और अब्बास[अ.स.] की ज़ियारत, बैअतुल मुकद्दस में अन्बिया किराम[अ.स.], मिस्र में काहिरा, मोइज़िया में रासुल हुसैन इसी तरह यमन और हिन्द में दुआत की ज़ियारत जरूरी है।

11. प्यारे बच्चों! आप को मालूम है कि इस्लाम सलामती, अमान का मज़हब है। इस्लाम तलवार से हरगिज़ नहीं फैला। हिकमत और खुश अस्लूबी और भाईचारे से फैला है। इस्लाम ने कभी हमला नहीं किया। हां, बचाव ज़रूर किया है। दुश्मनाने इस्लाम ने मक्का में मुसलमानों को खूब सताया। वहाँ बरदाश्त करने का हुक्म था। बचाव भी नहीं। फिर हिजरत के बाद मदीना में बचाव करने का हुक्म आया जिसको जिहाद कहते हैं। अल्लाह सुब्हानहू ने हर एक मुदाफिआना लड़ाई में हैदरे कर्रार अली[अ.स.] की मदद से फतह कामयाबी से नुसरत बख्शी। ये है छोटी जिहाद (जिहादे असगर)। इसके मुकाबले में बड़ी जिहाद (जिहादे अकबर) है जो हर हा

में आदमी और औरत पर वाजिब है। वो है अपने नफ्स (जान) पर काबू पाना। मनमानी नहीं करना। हर हाल में कुरआन और इस्लाम के अहकाम की पाबन्दी करना। मुखालिफत नहीं करना। मुजाहिदा करना।

12. प्यारे बच्चों! जब कुरआन की तिलावत करो तो पहले कहो "अऊज़ो बिल्लाहिस्समीइल अलीम मिनश्शैतानिर्रजीम, बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम" मैं संगसार किये हुए शैतान से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ और अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो रहमान है, रहीम है, रहमत करने वाला है। फिर बअदब तिलावत करो। इसी तरह जो भी काम करो पहले बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम कहो ताकि आपको बरकत और कामयाबी मिले। कम से कम सुबह की नमाज़ के बाद ये दुआ पढ़ो "अल्लाहुम्मा इन्नी अबतदिओ बैना यदे निसानी व मुजलती बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम" ऐ अल्लाह मैं किसी काम करने में भूल से या जल्दबाज़ी से बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम न बोली हो तो मैं अभी पहले से बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम बोल रहा हूँ। ऐसा पढ़ने से आइन्दा बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम पढ़ना भूल गये हो तो ये दुआ किफायत करेगी। प्यारे बच्चों! कभी भी बिना बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम बोले कोई काम मत करना।

13. प्यारे बच्चों! खबरदार देखो माँ–बाप का हर तरह से पूरा–पूरा ख्याल रखना। अल्लाह सुब्हानहू ने अपनी ताअत, इबादत और शुक्र के साथ–साथ ही माँ–बाप की इताअत और शुक्र का, उनके साथ अहसान करने का हुक्म दिया है। सूरए इस्रा में लिखा है कि ऐ मेरे बन्दों मेरी इबादत करो, माँ–बाप पर अहसान करो, भलाई करो अगर इन दोनों में से एक या दोनों बूढ़े हो जाए तो फिर उनको उफ्–तुफ् भी मत कहो। उनको झिड़को मत। उनके साथ अच्छी नरम बात कहो। उनके लिए तुम्हारी पांख नरम करो। उन पर दया मया करो। और कहो कि ऐ मेरे रब जिस तरह इन्होनें मुझ पर दया मया, रहमत की बचपन में मेरी परवरिश की तो तू उन पर रहमत कर। तुम्हारा रब तुम्हारे नफ्स की बात जानता है कि तुम माँ–बाप के साथ भलाई चाहते हो या बुराई। अगर तुम अल्लाह के ताअत गुज़ार. सालिहीन हो तो फिर वो अल्लाह भी ताअत गुज़ार बन्दों को बख्शने वाला है इनायत करने वाला है। जिस्मानी माँ–बाप के साथ बेहतर सुलूक करने के साथ–साथ रूहानी माँ–बाप नबी, वसी, इमाम, दाई,

उस्ताद की ताअत और ज़्यादा अहम है फर्ज़ वाजिब है। दोनों किस्म के माँ–बाप का इकराम करो, जब वो आए तो उनके लिए उठ जाओ। जब वो बुलाए तो फौरन जवाब दो। उनके सामने बात करो तो बिल्कुल अदब से धीमी आवाज़ में बात करो। उनकी अज़मत का पूरा ख्याल रखो। उनको झिड़को मत, उन पर दया मया करो। रोशनी में उनके साथ चलते हो तो उनके आगे मत चलो। अंधेरे में उनके साथ चलते हो तो उनके आगे चलो ताकि रास्ते में कोई तकलीफ रुकावट जैसी चीज़ हो तो उनका बचाव हो जाए। उनकी मुखालिफत मत करो। उफ्–तुफ् न कहो। उनकी उम्र दराज़ी की ख्वाहिश करो। उनकी तमाम ज़रूरियात पूरी करो। बेशक माँ के पांव के नीचे जन्नत है। नमाज़ में तशाहुद के आखिर में ये दुआ है कि "रब्बिग फिरली वले वालिदय्या वरहमहमा कमा रब्बियानी सगीरा" ऐ मेरे पालनहार, मुझे और मेरे माँ–बाप को बख्श दे और उन दोनों पर रहम कर जिस तरह उन दोनों ने बचपन में मेरी तरबियत की।

14. प्यारे नौनिहालो! जब तुम बड़े हो जाओ तुम्हारे माँ–बाप तुम्हारी शादी करे तुम अपनी दुल्हन के पास जाओ। शरअे मुहम्मदी के मुताबिक दोनों का किरान (मिलन) हो। दोनों के एक दूसरे पर हुकूक है। दोनों को आपस में सुकून, मुहब्बत, उल्फत और रहमत मिले। जहाँ तुम रहते हो वहीं बीवी को रखो। ज़रा भी उसको तकलीफ मत दो। तंगी न करो, अपनी हैसियत के मुताबिक ज़र–ज़ेवर, कपड़े देते रहो। उसके खर्च, नान–नुफ्का का पूरी तरह इंतज़ाम करो। जब तक खैर काम में वो फरमाबरदार रहे मारो मत। आगे रहकर उनकी ज़रूरियात समझ कर पूरी करो। बेहतरीन मुआशिरत करो, बीवी को भी लायक है कि अपने शौहर की नेक काम में फरमाबरदारी करे, उनका एहतराम इकराम करे। उसके कसम को सच्चा साबित करे। (शौहर कसम खा के कहे कि ऐसा होना चाहिए तो बीवी वो कर गुज़रे ताकि कसम झूठी न साबित हो।) उनकी नैमत का हर हाल में शुक्र करे। उनके साथ नम्रताई से पेश आये। उनके औलाद की माँ बनकर कफालत करे। उनकी अमानत में खयानत न करे। खुद अपना नफ्स (जान) उनकी अमानत है। उसकी बेहयाई, बदकारी से हिफाज़त करे। उनके माल की हिफाज़त करे। उनके भेद को ज़ाहिर न करे। उसकी मुखालिफत न करे और अपनी ज़ीनत को गैर महरम के सामने ज़ाहिर न करे। शर्म लिहाज़ का ख्याल, उनकी लोंडी बनकर रहे तो वो उसका

गुलाम बन जायेगा। खालिस दिल से मुहब्बत करे, घर की साफ–सफाई का ख्याल करे। उनकी खुशी में खुश और गमीं में गमगीन। इस तरह उनकी रफीकाए हयात बनकर रहे।

15. प्यारे बच्चों! आपके घर के आस–पास बस्ती ज़रूर होगी। वो बस्ती वाले आपके हमसाया (पड़ोसी) है। अगर वो हमसाया मोमिन और रिश्तेदार है तो उसके तिगुने हुकूक है, वो रिश्तेदार है तो उनके दुगुने हक है, या मोमिन है तो भी दुगुने हक है, न मोमिन न रिश्तेदार तो एक हक है। सफर का साथी, तालीम का साथी ये सब हमसाया है सभी के साथ बेहतरीन मुआशिरा, बेहतरीन सुलूक का हुक्म है। हमसाया के घर में झांके नहीं, उसकी बात को चोरी–छुपे सुने नहीं, इत्तफाकन् मालूम पड़ जाये तो फैलाये नहीं। उसकी छोटी–मोटी ज़रूरियात को पूरी करे, मदद करे। बड़ा हो तो हसद (जलन) न करे, छोटा हो तो घमंडी न करे। उसका पर्दाफाश न करे। नुकसान न पहुँचाये। वो नुकसान दे तो बरदाश्त करे। अपने हमसायों का इकराम करो। मेहमान की मेहमाननवाज़ी करो चाहे वो कोई भी हो।

16. प्यारे बच्चों! आपको याद है कि इस्लाम सलामती का पैगाम है। ईमान–अमान का पैगाम है। मुस्लिम मुस्लिम से मिले तो आपस में सलामती का पैगाम सुनाये। कहे "अस्सलामो अलैकुम" सलाम तुम पर यानि मेरी तरफ से तुम पर सलामती हो। तो जवाब देना फर्ज़ है कि "वालेकुम अस्सलाम" मेरी तरफ से भी आपके लिए सलामती है। लेन क्लियर हिसाब साफ! सलाम बोलना और सलाम का जवाब देना रसूल[स.अ.व.] की सुन्नत है। इससे आपस की सब खलिश दूर हो जाती है। अल्लाह सुब्हानहू ने कहा कि अल्लाह और अल्लाह के मलाइका (फरिश्ते) नबी पर सलवात पढ़ते हैं, ऐ मोमिनीन तुम भी नबी[स.अ.व.] पर सलवात पढ़ो और सलाम पढ़ते रहो। यहाँ तक कि नबी[स.अ.व.] और आले नबी पर सलवात पढ़ना सलाम पढ़ना फर्ज़ वाजिब है। सबसे ज़्यादा सखी वो है जो राहे खुदा में अपनी जान कुर्बान करे और सबसे ज़्यादा कंजूस वो है जो सलाम बोलने में भी कंजूसी करे। ज़िंदा लोग तो आपस में एक–दूसरे पर सलाम बोलते ही है, मगर मुर्दों पर भी सलाम बोलना चाहिए। जब कोई कब्रिस्तान में दाखिल हो तो कहे "अस्सलामो अलैकुम या अहलद्दार अन्तुम साबिकून व नहनो

इन्शा अल्लाहो तआला अन्करीबिन बिकुम लाहिकून" ऐ घर वालों तुम पर सलाम, तुम तो आगे चले गये अब हम भी अगर अल्लाह ने चाहा तो नज़दीक ही तुमसे आ मिलेंगे। खर्च में एतिदाल करो, खुद अपने जान से इंसाफ करो और सलाम बोलो, सिलत करो।

17. प्यारे नौनिहालों! आप अपनी हैसियत मुताबिक अलग–अलग तालीम की फील्ड में महारत हासिल करने के बाद बड़े व्यापारी, टीचर, लीडर, इंजीनियर, प्रोफेसर, डॉक्टर, मैनेजर या बाबू बनोगे या दीनी मौल्लिम, आमिल, वज़ीर या सदर बनोगे। आपके मातहत काम करने वाले सर्विसमेन, नौकर होंगे उनके मुत्तलिक आप सवालदाह होंगे, लिहाज़ा सुन्नते रसूल[स.अ.व.] ये है कि आप उनके साथ शफकत, मुहब्बत से काम ले। उनके रहने, खाने–पीने, कपड़े वगैरह ज़रूरियात का ख्याल रखना, इन्साफ करना, हर एक की ताकत से भी कम काम कराना, हराम कामों से दूर रखना, नमाज़ के वक्तों में, माहे रमज़ान में, वार–त्यौहार काम मुताबिक छुट्टी देना। भले मुशफिक माँ–बाप की तरह सबकी कफालत करना ज़रूरी है। वो भी तुम्हारे जैसे इन्सान है, पत्थर, लोहे, लकड़ी के नहीं। कि चाहो जिस तरह उस पर सख्ती करो। हरगिज़ नहीं! उसी तरह मातहती में काम करने वालों पर भी फर्ज़ वाजिब है कि वफादार, खिदमतगुज़ार बने, गद्दारी न करे, मुखालिफत न करे, हर तरह उन पर जो वाजिब है उसको दीनदारी से अदा करे। "जो करे सेवा वो खाये मेवा।"

18. प्यारे बच्चों! आप अकेले पूरी ज़िन्दगी बसर नहीं कर सकते। रिश्तेदारों, दोस्तों और समाज की ज़रूरत होती है। रिश्ते (रहम) को अल्लाह ने कहा "तू रहम है मैं रहमान हूँ, जो तेरे साथ सिलत करेगा, उसने मेरे साथ सिलत की, अल्लाह ने अपने साथ ही अरहाम (रिश्तेदारों) को जोड़ा है। रिश्तेदारों के साथ सिलत (अच्छा सुलूक) करने से उम्र बढ़ती है और बुरा सुलूक करने से उम्र घटती है। उलुलअरहाम यानि माँ–बाप, दादा–दादी, नाना–नानी, भाई–बहन, फुफी, मौसी वगैरह रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करो। ये लोग मुसीबत के वक्त पुश्त–पनाही करते हैं।" इसी तरह मौमिनीन भाईयों के साथ अच्छा सुलूक करो। बावा उनके नूर है, माँ रहमत है, नबीयुल्लाह मोहम्मद[स.अ.व.] बाप हैं और वलीयुल्लाह अली[अ.स.] माँ है और मौमिनीन उनकी औलाद आपस में भाई–भाई है।

मदीना तशरीफ लाते ही आका रसूलुल्लाह[स.अ.व.] ने सहाबा किराम के बीच भाई–चारा कायम किया। मौला अली[अ.स.] को अपना भाई बनाया। मौमिनीन भाईयों के हुकूक बहुत हैं। हरेक एक दूसरे के लिए सीसा पिलाई हुई दीवार बन जाए। समाज में सभी के मददगार बनना, सच्चे दोस्त के साथ निभाना, सभी के साथ अच्छा सुलूक करना। अच्छा नेक शहरी बनना ज़रूरी है। प्यारे बच्चों! ऐसे नेक शहरी बनो कि दीन और मुल्क के लिए आप बाइसे फख्र हो जाओ।

19. प्यारे बच्चों! इस्लाम का एक अहम हुक्म है "अम्र बिल मअरूफ और नहयि अनिल मुनकर" अच्छे काम का हुक्म करना और बुरे काम से रोकना। कुरआन में जगह–जगह ये हुक्म आया है कि खुदा व रसूल[स.अ.व.] का फरमान वो मअरूफ है और उसकी मुखालिफत मुनकर है। जहाँ कहीं बुराई देखो तो उसको मिटाने की कोशिश करो। अगर ऐसा न कर सकते हो तो ज़बान से बोलकर उसे मिटाओ। ये भी न कर सकते हो तो दिल से इनका इंकार करो। कहो कि ये बात मुनकर है और मैं इसका मुनकिर हूँ। अगर दिल से भी इंकार नहीं करोगे तो बदकारों के साथ तुम पर भी अज़ाब आयेगा। सूरए बनी इस्राईल में आयत नं. 22 से 39 तक 18 आयात में 14 अहकाम आये हैं। 1. तोहीद यानि सिर्फ अल्लाह की ही इबादत करो, शिर्क मत करो। 2. माँ–बाप के साथ नेक सुलूक करो। 3. रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करो। 4. फिजूल खर्च मत करो। 5. खर्च करने में एतिदाल रखो। 6. मोहताजगी के खौफ से औलाद को कत्ल मत करो। 7. ज़िना (व्याभिचार) और उसके असबाब से दूर रहो। 8. नाहक खून मत करो। 9. खुदकशी मत करो। 10. अहद पैमान, कौलो करार, वफा करो। 11. नाप–तोल बराबर अदा करो। 12. जिस बात को जानते न हो तो उसके पीछे मत पड़ो, जासूसी मत करो। 13. घमंड–गुरूर से दूर रहो। 14. यतीमों के माल की हिफाज़त करो और अल्लाह की तौहीद से लाज़िम रहो। अव्वल तौहीद आखिर तौहीद। अल्लाह तआला ने मना किया है शराब, नशे वाली तमाम चीज़, जुआ, तम्बाकु, सिगरेट, लॉटरी, नाच–राग, ज़िना, समलैंगिकता, बेहयाई, सूद, चुगलखोरी, झूठ, खयानत, दगाबाज़ी, रियाकारी वगैरह हराम चीज़ों से। ऐ अल्लाह के बन्दो पाबन्दी से दूर रहो।

20. प्यारे बच्चों जिगर पारो! अल्लाह सुब्हानहू के इस कौल की तिलावत करो "या अय्योहल लज़ीना आमनुत्तकुल्लाह व कूनू मअस्सादिकीन" ऐ वो लोगों जो ईमान लाये, अल्लाह से डरो और सच्चे लोग के साथ हो जाओ। सच्चे लोग अल्लाह की सच्ची बात को पहुँचाने वाले "सादिकल अमीन" मोहम्मद रसूलुल्लाह[स.अ.व.], अस्सिदीकुल अकबर, अली[अ.स.] और आपकी इतरत अइम्मा सादिकीन मासूमीन के साथ हो जाओ। उनकी सच्ची बातों को मानो सच बोलो आप की हर बात, हर फअल, हर अमल सच हो। सच्चाई से ही दीन और दुनिया में कामयाबी है। झूठ बड़ा पाप है, झूठे लोगों पर अल्लाह की लानत है। दुनिया झूठ का घर है। आखिरत सच्चाई का घर है। औलियाउल्लाह ने आखिरत की तरफ दावत की है। अल्लाह सुब्हानहू की सच्ची बात की तरफ सब को बुलाया है। सच बोलने से कभी वक्ती तौर पर तकलीफ आती भी है मगर नतीजा बेहतर होता है। दो और दो पांच नहीं सांच को आंच नहीं।

21. प्यारे बच्चों! देखो रसूलुल्लाह[स.अ.व.] की सुन्नत है खाना खिलाना। अल्लाह सुब्हानहू ने अहलेबेत[अ.स.] की शान में कहा है कि "व युत्तइमून अत्तआम अला हुब्बहि मिस्कीनन् व यतीमन् व असीरन् इन्नमा नुतइमुकुमि लिवजहिलल्लाहि ला नुरीदो मिनकुम ज़ज़ाअन व ला शकूरा" वो लोग अल्लाह की मोहब्बत की खातिर, या वो भूखे हो और खाना महबूब हो ऐसी हालत में वो भूखे रहकर मिस्कीन, यतीम और कैदी को खाना खिलाते हैं और कहते हैं हमने तुमको अल्लाह के लिए खाना खिलाया है, हम न तो तुमसे बदला चाहते हैं और न शुक्रिया। ये है अल्लाह वालों की सीरत। हमको लायक है कि हम इस सीरत पर चलकर उनकी पैरवी करे। खाने के आदाब की भी पाबन्दी करे। "अदब–बुदीन कब्लद्दीन।" खाने के पहले और बाद में दोनों हाथों को धोना, पहले और बाद में 'बिस्मिल्लाह हिर्रमान निर्रहीम' पढ़कर नमक चखना बाद में 'अलहम्दो लिल्लाह' कहना, खिलाने वाले के लिए और उसके माँ–बाप के हक में दुआ करना, जो चीज़ अपने पास हो खाना, पाँच उंगलियों से सफाई से खाना, छोटा निवाला लेना, अच्छी तरह चबाना, थाल में साथ बैठे हुए लोगों की तरफ नहीं देखना कि कौन कैसा और कितना खाता है, और उन सबका साथ देना, मनुहार नहीं कराना अच्छी तरह खाके खिलाने वाले को खुश करना, पालती मार कर नहीं बैठना ये जब्बारों की बैठक है, तवाज़ो जरूरी है, खुले सर नहीं बैठना,

जूठा नहीं छोड़ना, एक दाना भी बेकार नहीं होने देना, कमर के दर्द के लिए दाना चुन कर खाना। खाने (अतआम) के साथ इकराम (मान–पान) बहुत ज़्यादा ज़रूरी है। कहीं दावत के बगैर खाने को नहीं जाना। जिसके नाम से दावत आई हो उसी को जाना चाहिए, उसके बदले में किसी को नहीं जाना चाहिए। खाना पाकीज़ा, हलाल हो, गैर मुस्लिम के हाथ से पकाया हुआ खाना जायज़ नहीं। खाने में फिजूलखर्ची नहीं होना। अपनी हैसियत के मुताबिक ही खाना होना चाहिये। लोग दिखाई नहीं करना। रसूलुल्लाह[स.अ.व.] की सुन्नत है चार खाने करने की। 1. शादी 2. खतना 3. अकीका 4. नये मकान का मुहरत या बड़े सफर से वापसी में। इसके अलावा जो खाने रस्म के मुताबिक हो और शरीयत मना न करती हो तो वो मअरूफ है। इसमें छूट है। अगर शरीयत मना करती हो तो वह मुनकिर है, मुनकिर से दूर रहना चाहिए। खाना खिलाने की बहुत सी फज़ीलतें आई है। ये है खाने के आदाब।

22. प्यारे बच्चों! अल्लाह सुब्हानहू आपको हमेश तंदुरुस्ती अता करे। किसी किस्म की बीमारी से मुबतिला न करे। बीमारी और हर किस्म की मुसीबत जो आती है वह अपने गुनाहों की वजह से या बेएतिदाली से आती है, लिहाज़ा हर किस्म के गुनाह से यानि खुदा व रसूलुल्लाह[स.अ.व.] की बेफरमानी से दूर रहना और एतिदाल रखना बहुत ज़रूरी है। खुदा ना ख्वास्ता कोई बीमार हो जाए तो उसकी तीमारदारी करना और तबियत पुर्सी के लिए जाना सुन्नते रसूल[स.अ.व.] है। तबियत पुर्सी के लिए दिन में जाना हो तो जल्दी जाओ। रात में जाना हो तो भी जल्दी जाओ क्योंकि दिन से सूरज डूबने तक और शुरू रात से सूरज निकलने तक फरिश्ते उसके हक में दुआ करते हैं। लिहाज़ा जल्दी गये हो तो फरिश्ते की दुआ का वक्त ज़्यादा मिलेगा। बीमार के पास बैठने वाला गोया कि जन्नत की क्यारी में बैठा हुआ होता है। सिर्फ तबियत पुर्सी के लिए जाने वाला वहाँ ज़्यादा न बैठे। वहाँ मरीज़ के पास खाये–पिये नहीं। और मरीज़ के सर पर हाथ रख कर तंदुरुस्ती के लिए दुआ करे। मरीज़ अगर तंगदस्त हो तो उसकी माली मदद करे। मरीज़ के पास इधर–उधर की फालतू बातें या मर्ज़ के बारे में बढ़ा–चढ़ा कर बातें न करे। औरतों के लिए तबियत पुर्सी के लिए जाना मना है। खुदा ना ख्वास्ता मरीज़ का आखिरी वक्त आ गया हो तो उसे किबला–रू करके अज़ान इकामत कहे, कलिमते शहादत

पढ़ाये, दुआ करे, यासीन और आयतुल कुर्सी की तिलावत करे। 'इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलयहे राजिऊन' कहे। बीमार का इंतकाल हो जाये तो गुस्ल–कफन के बाद नमाज़े जनाज़ा में और दफन में शरीक होकर अज़ीम सवाब हासिल करे। मरने वाले के अज़ीज़ो को ताज़ियत–सब्र, तसल्ली की वसीयत करे कि मौत हिकमत है, रहमत है, सब्र का अज्रे अज़ीम है, जो सब्र न करे वो ही सही मायने में मुसीबतज़दा है। सब्र करने वाले को अल्लाह सुब्हानहू सलवात, रहमत और हिदायत अता करता है। नोहा व आहो–बुका करना बिल्कुल मना है। अलबत्ता दिल में दर्द और रंज हो तो और आंख से सिर्फ आंसू बहे, बस। मैय्यत पर नोहा, विलाप करने से मैय्यत को तकलीफ होती है। और नोहा करने वाले के लिए अज़ाब।

हां, नोहो–बुका जरूर छे ज़ेहरा न लाल पर,
छे सोगवारी फर्ज़ शफीउल माल पर।

खूं–रेज़ी कर जिगर थी शहीदे किताल पर,
शब्बीर सोगवर वो शहादत न हाल पर।

कानून जे ना गम नो छे अमलाक में तमाम,
पुश्ते–फलक खमीदा छे ये गम थकी मदाम।

जब भी कोई मुसीबत आये तो हुसैन इमाम[अ.स.] को याद करो। कोई ज़ालिम–फासिक बैअत तलब करे तो हुसैन को याद करो। कि सर कटा दिया मगर यज़ीद–पलीद लअनतुल्लाह के सामने सर झुकाया नहीं, सलामुल्लाह अलयहे, मुस्लिम कभी यज़ीद की बैअत न करेंगे। दुनिया के लिए दीन की ज़िल्लत न सहेंगे। रहमतुल्लाह। जब जवान बेटा मर जाये तो अली अकबर को याद करो, जब बच्चों की मौत हो जाए तो, अली असगर, औन व मोहम्मद, कासिम अब्दुल्लाह, मुस्लिम के बच्चे, मोहम्मद–इब्राहीम, आका रसूल[स.अ.व.] के बेटे इब्राहीम[र.अ.] को याद करो। घर में आग लग जाए तो हुसैनी खेमा को याद करो, औरतों पर जुल्म और बेपर्दगी की मुसीबत आये तो कर्बलाई हुसैनी हरम को याद करो।

हुसैन इमाम[अ.स.] फरमाते हैं ऐ मेरे शिया जब भी ठंडा पानी पियो तो मुझे याद करना या कोई मुसीबतज़दा, गरीब या शहीद की सदा सुनाई दे तो मेरे लिए नोहा विलाप करना। मैं ही वो सिबते मोहम्मद[स.अ.व.] हूँ कि मुझे बेगुनाह कत्ल किया और कत्ल के बाद मेरी लाश को घोड़ों के पैरो से

कुचल दी। काश! कि तुम देखते के रोज़े आशूर मेरे बच्चे के लिए किस तरह पानी मांग रहा हूँ। उन्होनें रहम नहीं किया और पानी के बदले तीर से मेरे बच्चे को शहीद किया। आह! ये तो ऐसी मुसीबत है कि जिससे पहाड़ का चूरा–चूरा हो जाए। ज़ैनब[अ.स.] अली अकबर[अ.स.] से कहती है–

"आगाज़ थे मसे[1] अभी, ऐसे मुसिन[2] न थे,
बच्चे मेरे अभी, तेरे मरने के दिन न दिन थे।"

हुसैन इमाम[अ.स.] आखिरी सजदे की तैयारी में सबकुछ छोड़कर चले और आवाज़ दी या ज़ैनब, या उम्मे कुलसुम, या रुकय्या, या सकीना अलैकुम मिन्नी अस्सलाम, तुम सब पर मेरा सलाम, सबको रूखसत किया, सवार हुए, मकतल में आए। हाए! वो दसवीं मोहर्रम की नमाजे अस्र, ज़ोहर का वक्त खत्म हो चुका, अस्र की तैयारी है, हुसैन[अ.स.] आखिरी सजदे के लिए बैचेन है, कुछ देर तो हमला किया, खूब लड़े, फातेह खैबर का लाल था कैसे न लड़ता, एक मर्तबा लाशे पिसर (बेटे) पर नज़र डाली कहा तुमने न देखी जंगे पिदर (बाप), ऐ पिदर के लाल, इसके बाद तलवार को रोक लिया, ज़ख्मी होते गये, जुलजिनाह (घोड़े का नाम) के गर्दन में हाथ डाल दिये.... कर्बला के मैदान में कौन बैन (विलाप) करे, कौन फरियाद करे, मोहम्मद[स.अ.व.] की बेटी फातिमा[अ.स.] चीखती हुई कह रही थी कि ज़ैनब[अ.स.] निकल! कभी कह रही थी कि–

जंगल से आई फातिमा ज़ेहरा की ये सदा,
उम्मत ने मुझको लूट लिया वा मुहम्मदा।

इस वक्त कौन हक की रिफाकत करे अदा,
हाय–हाय ये ज़ुल्म और दो आलम का मुक्तदा।

उन्नीस सौ है ज़ख्म तने चाक–चाक पर,
ज़ैनब निकल हुसैन तड़पता है खाक पर।

ऐ अर्द कर्बला मेरा बच्चा है बेगुनाह,
ऐ दश्ते नैनवा मेरा बच्चा है बेगुनाह।

ऐ नहरे अलकमा, मेरा बच्चा है बेगुनाह,
ऐ दहरे बेवफा मेरा बच्चा है बेगुनाह।

(1) होंठ के ऊपर के नये–नये बाल, (2) मूँछ वाले

घेरा है ज़ालिमों ने मेरे नूरे अैन को,
ऐ ज़ुल्फिकार तुझसे में लूंगी हुसैन को।
– अज़ अल्लामा रशीद तुराबी

हुसैन इब्ने अली[अ.स.] पुश्ते जुलजिनाह पर झुक रहे थे, दो हाथ कांपते हुए निकले ज़मीन से, ऐसे में हुसैन इब्ने अली[अ.स.] ज़मीन पर आये और आते ही वादाए तिफ्ली याद आया। अन्बिया की सीरत थी, वो वारिसे आदम[अ.स.], वारिसे नूह[अ.स.], वारिसे इब्राहीम[अ.स.] और वारिसे मूसा[अ.स.] व ईसा[अ.स.] थे, वो वारिसे मोहम्मद[स.अ.व.] थे, वो वारिसे अली[अ.स.] थे, गिरते ही सजदा किया। यही सजदा है जिसे इकबाल ने भी ज़िक्र किया। जिसे सारे शोअरा ने भी ज़िक्र किया। यही सजदा है कि जलती रेत पर पेशानी को रख कर आवाज़ दी "रिज़ाअन बिकज़ाइही व तसलीमन् लिअम्रिही" मैं तेरी कज़ा पर राज़ी हूँ और तेरे अम्र को तसलीम करता हूँ। "व सब्रन् अला बलाइका" और तेरे इम्तिहान पर सब्र करता हूँ "ला मअबूदा सिवाका" तेरे सिवा कोई माबूद नहीं "या गियासल मुस्तगीसीन" और आखिर में सजदे में एक दुआ की और अजीब दुआ की कि परवरदिगार मैने अपने वादे को पूरा किया अब तू अपने वादे को पूरा कर... सजदा खत्म हुआ, सर नहीं उठाया गया। सलामुल्लाह अलयहे। मौय्यद शीराज़ी[र.अ.] कहते हैं कि इमाम हुसैन इब्ने फातिमा[अ.स.] पर जो मुसीबत आई उनके दसवें हिस्से को याद करना मेरे जैसे मुसीबतज़दा को तसल्ली के लिए काफी है।

23. प्यारे फरज़न्दो! आप तो जानते ही हो कि मस्जिद अल्लाह का घर है। अल्लाह के घर का एहतराम बहुत ज़रूरी है। लिहाज़ा जब आप मस्जिद में दाखिल हो तो वुज़ू कर लिया करे। अन्दर जाने के लिए पहले अपना दायां पैर आगे करो और कहो "बिस्मिल्लाहि वबिल्लाहि अस्सलामो अलैयक या अय्याहन्नबियो रहमतो व रहमुतल्लाहि वबरकातुहू अस्सलामो अलैना इबादिल्लाहिस्सालिहीन" फिर मस्जिद में लोग हो तो कहो अस्सलामो अलैयकुम वरहमतुल्लाहि व बरकातुहू, नमाज़ का वक्त हो तो दो रकात 'तहय्यतुल मस्जिद' की अदा करो। जिसकी किराअत उतरती 'सूरए फलक' और 'सूरए नास'। मस्जिद में बअदब किबले की तरफ रुख करके बैठो। मस्जिद में थूंको नही, गंदगी–कचरा मत करो पाक–साफ रखो।

खरीद–फरोख्त नहीं करो। कोई चीज़ खो गई हो तो मस्जिद में ऐलान मत करो। हथियारों को मस्जिद से दूर रखो। हुदूद (शरई सजाएं) मस्जिद में कायम मत करो। बातचीत, शोरो–गुल मत करो। (मस्जिद में बाज़ार की एक बात करने से चालीस साल की इबादत का सवाब ज़ाया हो जाता है।) पेश इमाम नमाज़ में किराअत पढ़ते हो तो खामोशी से सुनते रहो। साथ–साथ बुलन्द आवाज़ से मत पढ़ो। हेज़ वाली औरतें और जनाबत वाले मर्द–औरत मस्जिद में दाखिल न हो। लहसुन खा कर मस्जिद में मत जाओ, गैर मुस्लिम, पागल, खेल–कूद करने वाले बच्चों को मस्जिद में आने से रोको। सप्ताह में एक बार मस्जिद में खुशबु करो (बखूर–अगरबत्ती)। मस्जिद के करीब वुज़ू–तहारत करने के लिए पानी और हम्माम का इंतज़ाम होना चाहिए। मस्जिद से बाहर निकलो तो बायां पैर आगे करो। हर हाल में मस्जिद में ताज़ीम–तौकीर वाजिब है। इसी तरह बातिनी मस्जिद यानि दीनी मजलिस की ताज़ीम–तौकीर, एहतराम वाजिब है। ज़ाहिरी नमाज़ का बातिन दीनी इल्म की तब्लीग और दावतुल हक का निज़ाम है दीनी वाअज़। मौल्लिम इकट्ठे होकर वाअज़ करते हैं, सुनते हैं दीनी तालीम देते हैं लेते हैं तो फरिश्ते उनपर साया करते हैं। उनके लिए रहमत मगफिरत की दुआ करते हैं। दीनी मजालिस और दीनी क्लास में सलाम–तसलीम के बाद अदब से बैठो। जो बयान व सबक होता हो उसको गौर से सुनो, याद रखो, अमल करो और उसकी तब्लीग करो। हाज़िर शख्स गायब तक पहुँचाने की कोशिश करे। इल्म को फैलाना यानि इल्म को ज़िन्दा करना है। रसूलुल्लाह[स.अ.व.] ने कहा कि रहमत करे अल्लाह उस उम्मती को जो मेरी एक हदीस भी लोगों तक पहुँचाये, हमारे हुक्म को तब्लीग करके ज़िन्दा करे, मजालिस और मसाजिद की तामीर करे।

24. प्यारे बच्चों! सफ–ब–सफ, कंधे से कंधे मिलाकर सब काम को पूरा करो। दीन और दुनिया के कामों में आगे बढ़ते रहो। नमाज़ की सफ बराबर रखो। ये यही सबक सिखाता है कि जो भी काम करो कंधे से कंधा मिलाकर एकमत होकर, आपस में कोई इख्तिलाफात न हो। सफ में ज़रा भी खलल होगा तो शैतान मुदाखिलत करके तफरका (फूट) डालेगा। एक मत होकर सीसा पिलाई हुई दीवार बन जाओ। इसी तरह आगे बढ़ते रहो।

25. अज़ीज़, मोहतरम, प्यारो! अल्लाह तआला का कौल है कि "इन्नल्लाहा युहिब्बुत्तव्वाबीना व युहिब्बुल मुतताहिरीन" अल्लाह सुब्हानुहू तौबा करने वालों को चाहता है और पाक–साफ रहने वालों को चाहता है। गुनाहों से दूर रहकर तौबा करना और जिस्मानी तहारत का ख्याल रखना बेहद ज़रूरी है। इन्सान को अपनी सेहत के लिए और अपने हाजमे के लिए पेट को साफ रखने के लिए बैतुल खला (लेट्रिन) में जाना बेहद ज़रूरी है। इसके लिए सुन्नते रसूल[स.अ.व.] में आदाब आये हैं। जिनकी पाबन्दी से पाखाने से निजाती और सेहत के साथ अल्लाह सुब्हानुहू की नैमतो के लिए शुक्रिया और मगफिरत हासिल होती है। इसलिए इसे पाबन्दी से याद रखो। बैतुल खला में खुले पैर और खुले सर मत जाना। बैतुलखला में अन्दर जाते वक्त बांया पैर आगे करना। अन्दर जाते वक्त 'अऊज़ो बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम' कहना। लेट्रिन में बैठते वक्त अपने बांये पैर पर दबाव देना। गलाज़त (पाखाने) पर नज़र पड़े तो कहना "अल्लाहुम्मर्जुकनी हलाला व जन्नबिल हराम" ऐ अल्लाह मुझे हलाल रिज़्क देना और हराम से दूर रखना। पाखाने में ज़्यादा देर नहीं बैठना। फरागत के बाद कहे "अलहम्दो लिल्लाहिल्लजी आफानी फी जसदी व अमा तअन्नी अल अजा व अत अमनी फी आफियतिन् व अखरजा मिन्नी फी आफियतिन व हन्नाइनी तआमी व शराबी" तमाम हम्दो–सना अल्लाह के लिए जिसने मुझे आफियती बख्शी, ईज़ा (दुख) को दूर किया, आफियत से खिलाया आफियत से निकाला और खाने–पीने में सेहत अता की। इस तरह दुआ पढ़े ऐसा अमल करना ईमान की तकमील है। हड्डी–छाने वगैरह नापाक चीज़ से खड़ाऊ (पाखाना साफ करने का साधन) मत लेना। खड़ाऊ एकी से यानि एक, तीन, पांच लेना। गलाज़त के ऊपर पानी मत डालना। नल का वाल्व खोल कर गलाज़त दूर करने के बाद इस्तिंजा करना। बोलना, बातचीत नहीं करना। किबला–रू होकर भी नहीं बैठना व किबले की तरफ पीठ करके भी नहीं बैठना। बाहर निकलते वक्त दायां पैर आगे करना। रूहानी और जिस्मानी दोनों किस्म की सेहत व आफियत के लिए इन आदाब की पाबन्दी बहुत ज़रूरी है इसके साथ फितरी तहारत, पैदाइशी पाकी–साफी का ख्याल भी ज़रूर रखना प्यारे बच्चो! और वो है इब्राहीमी मिल्लत के एहकाम जो इस्लामी मोहम्मदी शरीयत के भी एहकाम है। वो है होठों के

ऊपर के बाल काटना, नाखून काटना, बगल के बाल साफ करना, शर्मगाह के बाल साफ करना, खतना करना, लड़के की खतना बहुत जल्दी व लड़की की खतना सात साल बाद। खाने के बाद दांतों को साफ करना, कनपटी और गाल पर फैलाये हुए बाल को निकालना। दोनों मूंछ और दाढ़ी को बिल्कुल सलामत रखना। दाढ़ी मूंडना, काटना, रंगना और गूंथना नाजायज़ है। सफेद बाल तो नूर है उसको बुझाओ मत। औरतें सर के बाल सलामत रखे, कंगन करे, संवारे, मेंहदी लगाए, ज़ेवर पहने, खुले सर न रहे पर्दे का पूरा ख्याल रहे, मर्द और औरत हर तरह से पाक साफ रहने के साथ पाक–साफ सीरत वाले बन जाए।

26. प्यारे बच्चों! अल्लाह सुब्हानुहू ने कहा है कि "फकरऊ मा तयस्सरा मनलकुरआनो व रत्तलिल कुरआना तरतीला" जितना पढ़ सको कुरआन पढ़ो और तरतील से पढ़ो। कुरआन करीम अल्लाह की किताब है। अल्लाह की अज़मत समझ कर दिल को अल्लाह तआला की तरफ तवज्जा देकर खुशुअ और खुजू के साथ ये समझ कर तिलावत करो कि अल्लाह मुझसे कलाम कर रहा है। तरतील के साथ ठहर–ठहर कर, गौरो फिक्र के साथ कुरआनी अजाइबात से मुत्तासिर होकर कुरआन पढ़ो। सिर्फ ज़ाहिरी तौर पर अच्छी आवाज़ पर ही तौकुफ न करते हुए मतलब को समझने की कोशिश करो। अल्लाह तआला को हाज़िर–नाज़िर समझ कर वुज़ू करके किबला–रू बैठकर तिलावत करो। कुरआन को ऊँची जगह पर रखो। कुरआन के ऊपर और कोई चीज़ मत रखो। कुरआनी मफहूम समझने के बाद अमल करने की खास कोशिश करो। कुरआन को देखना भी इबादत है। लिहाज़ा देखकर आवाज़ से कुरआन पढ़ो, ये अफज़ल है, ज़बानी पढ़ सकते हो तो ज़बानी पढ़ो। नबीए करीम[स.अ.व.] ने फरमाया कि तंगदस्ती की वजह से कोई गरीब नहीं, गरीब वो कुरआन है कि जिस घर में हो और घर वाले पढ़ते न हो, उसके मुताबिक अमल न करते हो। गरीब वो मस्जिद है जो कौम के बीच हो और वो नमाज़ियों से खाली हो। गरीब वो आलिम है जो कौम के बीच हो और लोग उसके इल्म से फायदा न उठाते हो।

27. प्यारे बच्चों! अल्लाह तआला ने आपको सबसे बड़ी नैमत जो दी है वो है अक्ल, अक्ल से ही इन्सान, इन्सान है। कुरआन में हर जगह अक्ल वालों से ही खिताब है। अक्ल है तो सब कुछ है। अक्ल नहीं तो कुछ नहीं। खासतौर से अक्ल शरीयत के ताबैअ हो। अगर अक्ल शरीयत के ताबैअ

नहीं हो तो हैवानियत बल्कि शैतानियत है। इसीलिए शरीयत ने शराब और नशावर चीज़ों को सख्ती से हराम किया क्यूंकि वो अक्ल के कातिल है। शरीयते मोहम्मदी की बुनियाद अक्ल पर ही है, अक्ल को मिटाने वाली शराब तमाम बुराईयों की जड़ है। उम्मुल खबाइस (सभी बुराइयों की माँ) है। एक तपिया (संत) ने एक फाहिशा औरत के दबाव से शराब पी ली तो नशे में उससे ज़िना किया, कुरआन को जलाया और बच्चे को कत्ल किया। जब उसको फांसी पर चढ़ने का वक्त आया तो शैतान ने उसको कहा कि मैं तुझे छुड़ा दूंगा तू मुझे सजदा कर। उसने शैतान को सजदा किया वो पहले आबिद था, अब फाजिर, काफिर हो गया। इस तरह शराब की वजह से उसने सारे गुनाह कर लिये। इसलिए प्यारे बच्चों! ऐसी नापाक चीज़ों से और ऐसे नापाक लोगों से हमेशा दूर रहना और उनपर लानत भेजना।

28. प्यारे बच्चो! हमारे मौला अमीरुल मौमिनीन[अ.स.] शहरे रमज़ान की 21वीं रात को सन् 40 हिजरी में वफात हुए। आपने आखिरी वसीयते की। उनका खुलासा ये है। "ऐ मेरे अहलेबेत, ऐ मेरे शिया, इत्तकुल्लाह", अल्लाह की तकवा से लाज़िम रहना। आपस की इसलाह, रोज़े–नमाज़ से अफज़ल है, बीमारी और मौत के पहले अमल और तौबा कर लेना। हवानफ्सी, मनमानी मत करना। अल्लाह व अल्लाह के रसूल[स.अ.व.] और मोमिनीन की खैरख्वाही करते रहना। अहलेबेत[अ.स.] से वलायत मुहब्बत खालिस दिल से करना। तहारत, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज, शहरे रमज़ान के रोज़े, जिहाद, सलातुल वत्र, अम्र बिल मअरूफ, नहयि अनिलमुनकर, सिलतुल अरहाम, इफ्शाअस्सलाम, इत्आमुल अतआम, मेहमानदारी, मुसाफिरों की इमदाद और इमाम की ताअत से वाबिस्ता रहना। ज़िना–फहश, बेहयाई, गीबत (दूसरों की बुराई), बुग्ज़–अदावत, झूठ–बदगुमानी, तकब्बुर–हसद और हिर्स (लालच) जैसे हराम कामों से दूर रहना। खबरदार! ऐसा ना हो तुम्हारा हमसाया (पड़ोसी) भूखा हो और तुम सेरो–सैराबी के साथ रात गुज़ारो। हमेशा 'लाहौल वला कुव्वता इल्लाबिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम' की तस्बीह करते रहना और बच्चों को इसका पाबन्द करना। बच्चों की खतना जल्दी कराना। यतीमों, मिस्कीनों और बेवाओं की खबरदारी और मदद करते रहना। आखिरत में रगबत और दुनिया में ज़ुहद तुम्हारा शऊर हो। कलिमते शहादत से लाज़िम रहना। ऐ लोगों अगर किसी का मुझ पर

किसास हो तो ले ले। मेरी आखिरी वसीयत ये है कि अल्लाह का शिर्क मत करना और मोहम्मद[स.अ.व.] की सुन्नत को ज़ाया मत करना। इस्लाम के ये दो सितून है उसको पकड़े रखना। अब मैं तुमसे फिराक (जुदाई) करने वाला हूँ। मैं अपने खून का वली हूँ फिर आपने हसन इमाम[अ.स.] को इमामत और अमानात सौंपी। कलिमते शहादत पढ़ते हुए फरमाया कि 'अल्लाहुम्मा बारिकली फिलमौत व सल्ले अला मोहम्मदिन व आले मोहम्मदिन अस्सलामो अलयकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू'"

सुबह–शाम 'या अली–या अली' पुकारने वाले प्यारे बच्चों अली[अ.स.] की आखिरी वसीयतो पर जो खितामे मिस्क है, इस किताबचे को मैं खत्म करता हूँ और आखिरी वसीयत ये करता हूँ कि इस किताबचे में जो कुछ लिखा गया है वो किताब 'दआइमुल इस्लाम' और दअवतुल हक की दूसरी किताबों का मुख्तसर खुलासा है। आफताबे नबुवत व इमामत की शुआओ की ज़रा सी झलक है, इससे रोशनी हासिल करो और इन उसूले दीन को अच्छी तरह समझ कर अपनी ज़िन्दगी को पाकीज़ा बनाओ, हयाते तैय्यबा बनाओ। माँ–बाप और उस्तादों का फर्ज़ है कि अपने बच्चों को, अपने शार्गिदों को इन उसूले इस्लामिया व ईमानिया की तालीम देकर बेहतरीन तरबियत करे, ताकि बड़े होकर वो दीन और मुल्क के नेक शहरी, दीनदार, बावकार, बाइसे फख्र बने, आंखों की ठण्डक हो जाए फिर वो इस कुशादा दुनिया में चाहे वहाँ जाएं मगर अल्लाह के इस कौल के मुताबिक उनका इस आलम में दौर–दौरा हो। "इन अर्दी वासेअतुन फइय्याइ फाअबुदूनि सिरुफिल अर्द" ऐ मेरे बंदो मेरी ज़मीन बहुत कुशादा है, जाओ जहाँ कहीं जाना हो, मगर मेरी ही इबादत से लाज़िम रहो, मेरे ही बंदे बनकर रहो। एक शायर ने कहा है कि–

तुम शौक से कॉलेज में फलो, पार्क में फूलो,
ज़ायज़ है गुब्बारे में उड़ो, चर्ख पर झूलो,
बस एक सुखन बंदा आजिज़ का रहे याद
अल्लाह को और अपने उसूलों को न भूलो।

43वें दाई मुत्लक सैय्यदना अब्दे अली सैफुद्दीन आलल्लाहो कुदसहू ने वफात के वक्त अपने सात साला बैटे सैय्यदना मोहम्मद बदरुद्दीन[आ.कु.] 46वें

आखिरी दाई मुत्लक को वसीयत की नसीहत की जो पुर असरार नसीहत है। प्यारे बच्चों इस नसीहत पर अमल करो।

1. इल्म न मोती झरो, पढ़वा नी हठ न करो,
अपना मुल्ला सी डरो, कीका[1] भाई जल्दी पढ़ो।

2. बावाजी गुल्डा[2] थया, दारा[3] थोड़ा सा रया,
कौन करसे आ मया[4], कीका भाई जल्दी पढ़ो।

3. रात दिन काहिली छे, दिल ऊपर बेकली छे,
ऐहवी सूं गाफिली छे, कीका भाई जल्दी पढ़ो।

4. कहूँ छूं थोड़ा कलाम, मारा मौला छे इमाम,
तैना हाथे छे ज़िमाम[5] कीका भाई जल्दी पढ़ो।

5. चाहे ते तौर करे, फिअल फिलफौर[6] करे,
कोई सूं गौर करे, कीका भाई जल्दी पढ़ो।

6. अदना ने आला करे, रांक[7] ने राजा करे,
टीपा ने दरिया करे, कीका भाई जल्दी पढ़ो।

7. कहूं ते मानो तमे, वात आ जानो तमे,
रमज़[8] पहचानों तमे, कीका भाई जल्दी पढ़ो।

8. इल्म पर लाज़िम रहो, फज़्ल पर दाईम रहो।
नस ऊपर काइम रहो, कीका भाई जल्दी पढ़ो।

9. मोटाई जान सो ना, कोई नो मान सो ना,
फख्र ने तानसो ना, कीका भाई जल्दी पढ़ो।

10. बावा नी चाले चलो, दीन नी वाते पलो,
कुफ्र नी राह सी टलो, कीका भाई जल्दी पढ़ो।

11. रहयो कोई न रहे, बावा विन कौन कहे,
जे खुदा मा ही सहे, कीका भाई जल्दी पढ़ो।

12. दुनिया ऊपर न पड़ो, किबला रू मुंह करो,
ऊँचा रूत्बा ने चढ़ो, कीका भाई जल्दी पढ़ो।

13. ज़हदो तकवा पर रहो, इम्तिहानात सहो,
जे कहो सांचु कहो, कीका भाई जल्दी पढ़ो।

14. रहजु सीधा ने समा, कहे शहज़ादा नमा,
जे नमा रब ने गमा, कीका भाई जल्दी पढ़ो।

15. अदना थई रहजु गुलाम, शुक्र नु कहजु कलाम,
सजदा दई ने करजु सलाम, कीका भाई जल्दी पढ़ो।

16. म्हारा बावाजी ज़की, जई उज्जैन झुकी,
लीदी शान मुलकी, कीका भाई जल्दी पढ़ो।

17. शह ज़की यहाँ सी गया, नजमे दीन भी न रहया,
केहवी दुनिया नी मया, कीका भाई जल्दी पढ़ो।

18. जई जन्नत मा वसा, ते जगह जई ने रहया,
जहां छे रब नी पसा, कीका भाई जल्दी पढ़ो।

19. खार[9] करसो न भला, लेहवु पडु ना भला,
आ विसरसव न भला, कीका भाई जल्दी पढ़ो।

20. कहां दुनिया मा अमान, कौन पासे छे ज़मान,
रात दिन तीरो कमान, कीका भाई जल्दी पढ़ो।

21. दारा जाए छे ने रात, रहे छे लोगों मा ज़ात,
जेहवु कीदु तेहवु साथ, कीका भाई जल्दी पढ़ो।

22. जिवारे बीबी करो, ऐहने कौना मा धरो,
रखे फितना मा पड़ो, कीका भाई जल्दी पढ़ो।

23. जो जो हर जागे जई, बीबी सी सूं सूं थई,
बीबी सी जन्नत गई, कीका भाई जल्दी पढ़ो।

24. गनु बोली सूं करूं, सरवे भूली सूं करूं,
भेद खोली सूं करूं, कीका भाई जल्दी पढ़ो।

25. जो पढ़ा होता किताब, अरबी करतो खिताब,
हवे हर तरह शिताब, कीका भाई जल्दी पढ़ो।

व आखिरो दअवनाअनिल हम्दो लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

---

(1) छोटा प्यारा बच्चा, (2) ज़ईफ, (3) दिन (4) लालन–पालन (5) लगाम (6) काम पूरा करना (7) गरीब/फकीर (8) भेद

मनकबते अली

खुर्शीद तेरे नूर का ज़र्रा है या अली,
दरिया तेरे फयूज़ का कतरा है या अली,
हर जान तेरे लुत्फ से ज़िन्दा है या अली,
हर शै में तेरे नूर का जलवा है या अली,
मुश्किल में तू हरेक का सहारा है या अली,
दोनों जहाँ में तेरा भरोसा है या अली।

तू शह सवार मिम्बरे मैदां है या अली,
तौहीद तेरे इल्म के कुरबां है या अली,
ईमान तेरा ताबअेफरमां है या अली,
इस्लाम तेरा बन्दाए अहसां है या अली,
मुश्किल में तू हरेक का सहारा है या अली,
दोनों जहाँ में तेरा भरोसा है या अली।

गम ने हर एक सिम्त से घेरा है या अली,
सर पर पहाड़ रंज का टूटा है या अली,
मझधार में गरीब का बेरा है या अली,
मलजा[1] तेरे सिवा है न मावा[2] है या अली,
मुश्किल में तू हरेक का सहारा है या अली,
दोनों जहाँ में तेरा भरोसा है या अली।

बन्दा गुनहगार है, तकसीरवार है,
तोशा अमल का साथ नही, शर्मसार है,
रस्ता कठिन, गरीब तेरा, पा फिगार है,
मंज़िल कड़ी है सर पे गुनाहों का बार है,
मुश्किल में तू हरेक का सहारा है या अली,
दोनों जहाँ में तेरा भरोसा है या अली।

(1) सहारा (2) जन्नत का नाम (सहारा)

कब तक निशान तीर मसाइब भला रहूँ ?
मुश्किलकुशाए खल्क में यूं मुबतिला रहूं ?
चंगुल में आफतों के कहां तक फंसा रहूं ?
मरकब मिले तो मंज़िले मकसद पे जा रहूं,
मुश्किल में तू हरेक का सहारा है या अली,
दोनों जहाँ में तेरा भरोसा है या अली।

लिल्लाह रहम कीजिए उम्मीद्वार हूं,
मुद्दत हुई कि पंजाए गम में शिकार हूं,
कीजिए मदद कि बहरे मसाइब से पार हूं,
मौला! गुनाहगार हूं, तकसीरवार हूं,
मुश्किल में तू हरेक का सहारा है या अली,
दोनों जहाँ में तेरा भरोसा है या अली।

तेरे सबब खलील भी नेरां से बच गए,
आदम 'शिकारे पंजा' शैतान से बच गए,
मूसा तेरे तजल्लिए सोज़ां से बच गए,
नूह भी शदाइदे तूफां से बच गए,
मुश्किल में तू हरेक का सहारा है या अली,
दोनों जहाँ में तेरा भरोसा है या अली।

यूसुफ की आपने चे किनआन में की मदद,
सलमान की चंग शेर निस्तां में की मदद,
अहमद की भी रिसालते यज़दा में की मदद,
तैग़ो ज़बां से मिम्बरो मैदां में की मदद,
मुश्किल में तू हरेक का सहारा है या अली,
दोनों जहाँ में तेरा भरोसा है या अली।

तेरे सबब दिखाए ईसा ने मौजिज़ात,
मुर्दों को तूने बख्श दी मौला मेरे! हयात,
यूनुस को भी तेरे ही सबब मिली नजात,
मेरी निदा भी सुन ले शहंशाहे कायनात,
मुश्किल में तू हरेक का सहारा है या अली,
दोनों जहाँ में तेरा भरोसा है या अली।

बहरे जनाबे अहमद व ज़ेहरा मदद करो,
मौला! हसन, हुसैन का सदका मदद करो,
रब्बे ज़मां का वास्ता आका मदद करो,
आका मदद करो, मेरे मौला मदद करो,
मुश्किल में तू हरेक का सहारा है या अली,
दोनों जहाँ में तेरा भरोसा है या अली।

या अली आप आईये क्या देर है,
राह उनकी देखता हूँ देर से,
भेज दीजिए अब्बास को वो भी खुदा का शेर है,
जिसने सलमा को छुड़ाया शेर से,
मुश्किल में तू हरेक का सहारा है या अली,
दोनों जहाँ में तेरा भरोसा है या अली।

नामी है तेरे नाम से अशजार या अली,
जारी है तेरे फैज़ से अनहार या अली,
हर सू तेरे सनअ के आसार या अली,
शम्सो कमर में है तेरे अनवार या अली
मुश्किल में तू हरेक का सहारा है या अली,
दोनों जहाँ में तेरा भरोसा है या अली,

"तन्ज़ीमे इशाअत इस्लामी तअलीम" की शाअे करदा किताबो की फहरिस्त

1. माहे रमज़ान की फज़ीलतें और रोज़े की फज़ीलत (हिन्दी)
2. अमर कहानी मौलाना कुतबुद्दीन शहीद कुदसुद (हिन्दी)
3. हिन्दी सहीफा मय 14 सुरते तर्जुमा के साथ
4. मय्यत के अहकाम (हिन्दी व उर्दू)
5. निकाह तलाक के अहकाम (हिन्दी व उर्दू)
6. इमाम इस्माईल (अ.स.) (हिन्दी व उर्दू)
7. कुरआन मजीद की इस्लामी तफसीर (4 जिल्द में बोहरा गुजराती में)
8. अहसनुल कसस– आदम (अ.स.) से इमाम तक अम्बिया औलिया की तारीख
9. यासीन – इन्नल्लाह (अरबी – हिन्दी)
10. सनसनी खेज़ हकाइक (उर्दु)
11. इल्म ना मोती जरो नसीहत की तशरीह
12. हैरतअंगेज़ इन्किशाफत
13. खमाइलुल रातिईन
14. रहनुमाए हज व जियारत
15. मजमउल बहरेन (जिल्द अव्वल) शहाबुन नबवी व नेहजुल बलागा का तर्जुमा
16. मजमउल बहरेन (जिल्द सानी) नेहजुल बलागा व खुतुबतेन फातिमिया का तर्जुमा व 100 फज़ीलते
17. नकाब कुशाइ (असगर अली इंजिनियर पर तन्कीदी जायज़ा)
18. चाँद और रोज़ा, चाँद और खलाबाज़ और चंद मुफीद मज़ामीन
19. मौला अली की 100 फज़ीलते (हिन्दी व उर्दू)

20. किताबतुत तौरात (अरबी के साथ उर्दु तर्जुमा)
21. दाअइमुल इस्लाम (जिल्द अव्वल) बोहरा गुजराती
22. दाअइमुल इस्लाम (जिल्द सानी) बोहरा गुजराती
23. इस्राईली इबरतनाक हदीसे (उर्दु तर्जुमा)
24. हयाते तय्यबा (शेख अहमद अली राज की सवानेह उम्री)
25. इस्बातुत तावील व हकीकत
26. मुताअतुन निसा (मुताअ कुरआन और हदीस की रोशनी में नाजायज खालिस ज़िना)
27. फातिमी खुतबात मय कुतबी व बदरी शहादत नामा
28. पंजतियात (दीवाने अहमद अली राज – अरबी)
29. 15 मुनाजात (इमाम ज़ैनुल आबिदीन की मुनाजातो का तर्जुमा)
30. निकाह तलाक मय विरासत के अहकाम
31. तीन लुकमान (मय ज़मीमा फखरी, खनवी व दाऊदी)
32. वज़कुर फिल किताबे इस्माईल (उर्दु)
33. कुरआन मजीद की इस्माईली तफसीर (तिलावत व तर्जुमा शेख अहमद अली राज सा. की आवाज़ में कैसेट सेट 141)
34. यमानी मनसक, यमन में यमानी दुआत के मज़ारात
35. ज़रा सोचिए
36. यूसूफ सिद्दीक
37. इमाम हसन (अ.स.)
38. इमाम हुसैन (अ.स.)
39. मोहम्मद (स.अ.व.), तैय्यब (अ.स.)
40. वफात की इददत व सोग वारी
41. छियालीस 46 दुआते हक मय फज़लाअ किराम (बोहरा गुजराती)

42. दआईमुल इस्लाम का मुख्तसर खुलासा

43. Y. N. और 4 उस्ताद मज़लुम

44. नस–रज़ा, मीसाक और बराअत

45. गुलदस्ता–ए–मालूमात

46. अलवी और हुसैनी मुनाजात

47. जैंनब नामा

48. किस्सा तमीम अन्सारी

49. नहजतुल मनाकिब

50. इन्सान और हैवानात का मुकदमा (इख्वानुस सफा का एक रिसाला)

51. कुफ्राने नैमत

52. तौहफतुल मुस्सलीन

53. अहयाउल लैल

54. नस रज़ा और बराअत

55. रहनुमाए हज (दूसरा हिस्सा)

56. तन्बीहुल गाफिलीन (तर्जुमा)

57. तौहफतुल इख्वान (पहला हिस्सा, दूसरा हिस्सा– इख्वानुस्सफा के 52 रिसालों का मुख्तसर इकतिबास)

58. तौहफतुल इख्वान (तीसरा हिस्सा– किताब तौहफतुल कुलूब अल मौजज़ा, अल काफिया और ताजुल अकाइद (तीन किताबों) के इकतिबासात का मजमुआ)

59. तन्बीयुल हादी वलमुस्ताहदी

60. मजालिसे हातिमिया

61. नजमी मनाहिस

62. अल्लाह वालों का बचपन और बच्चों की तालीम व तरबियत

63. अब्बास अलमदार वगैरह अब तक लगभग 67 किताब छप चुकी है।

1. यह किताब भाई मेहमूद अरस्तू हैदराबादी की गुज़ारिश पर लिखी गई है।

2. इस किताब का खर्च एक नेक बहन कनीज़े बतूल ने इनायत किया है, अल्लाह सुब्हानहू उन्हें जज़ाए खैर अता करें।

3. नौजवानों को ज़्यादा से ज़्यादा रूहानी फायदा हो इसलिए इस किताबचे की ज़्यादा से ज़्यादा कॉपी छपवा कर सवाब हासिल करें।

4. इस किताबचे को छापने में जिन–जिन हज़रात ने अपनी माली और अमली इमदाद फराहम करवाई उन सबके लिए खुदावन्दे करीम से दुआ है कि वे उन्हें जज़ाए खैर अता करें।